



सविता

हिंदी गृह पत्रिका
अप्रैल - सितंबर 2021



**प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा I) एवं
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II) के कार्यालय
केरल, तिरुवनंतपुरम**



लोकहितार्थ सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

सविता

हिंदी गृह पत्रिका
अप्रैल – सितंबर 2021

मुख्य संरक्षक
सुश्री अनिम चेरियान
प्रधान महालेखाकार

संरक्षक
श्री को.प.आनंद
प्रधान महालेखाकार

मुख्य संपादक
डॉ अनीष डी
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)

परामर्शदाता
श्रीमती शेरिन एम.एस
वरिष्ठ उप महालेखाकार
(प्रशासन एवं ए एम जी I)

सदस्य

श्रीमती एस लक्ष्मी

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती ए एम भद्राम्बिका

हिंदी अधिकारी

श्रीमती राधिका टी वी

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

सुश्री अनिता दास

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्रीमती विष्णुदेवी राजसेनन

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्रीमती जे आर आशा

हिंदी अधिकारी

श्री संदीप कुशवाह

वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

श्री सादत हुसैन रिज़वी

कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

संदेश



राजभाषा के कार्यान्वयन में कार्यालयीन गृह पत्रिकाओं की भूमिका सदैव ही महत्वपूर्ण रही है। इस दिशा में कार्यालयीन हिंदी पत्रिका 'सविता' का नवीनतम अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अपार प्रसन्नता की अनुभूति हो रही है।

वर्तमान समय में जब देश व दुनिया विषम परिस्थितियों से गुज़र रहा है, ऐसे में प्रेरणा और प्रोत्साहन के द्वारा ही इन कठिन स्थितियों से उभरा जा सकता है। इन परिस्थितियों को देखते हुए ही अब पत्रिकाओं को ई-संस्करण के रूप में तैयार किया जा रहा है। इसका एक सकारात्मक पक्ष यह भी रहा है कि जहां पहले पत्रिकाएं केवल गिने-चुने लोगों के पास ही पहुंच पाती थी, या कभी कभी तो यह पुस्तकालय की शोभा मात्र ही रह जाती थी, वहीं ई-पत्रिकाओं के प्रकाशन से अब पत्रिकाएं सभी पाठकों तक पहुंच रही है।

ई-पत्रिका का यह अंक राजभाषा हिंदी के प्रति इस कार्यालय के लक्ष्यों को पूरा करने की दिशा में एक छोटा सा प्रयास है। मैं पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को बधाई देती हूँ साथ ही सभी रचनाकारों को साधुवाद, जिनके सुंदर लेखों ने इस पत्रिका को अत्यंत मनमोहक बना दिया है।

सभी को सुखद एवं स्वस्थ भविष्य की शुभकामनाएं.....

अनिम चेरियान

अनिम चेरियान
प्रधान महालेखाकार

संदेश



कार्यालयीन हिंदी ई-पत्रिका “सविता” के नवीनतम अंक के प्रकाशन पर हार्दिक अभिनंदन ।

कार्यालय में राजभाषा हिंदी के प्रयोग में वृद्धि के साथ- साथ कर्मियों में पठन-पाठन का एक अच्छा वातावरण तैयार करने में कार्यालयीन पत्रिका का विशेष महत्व है। गृह -पत्रिका के माध्यम से कर्मचारियों को अपने अनुभवों, विचारों और आवेगों को शब्दों में पिरोने का अवसर मिलता है। इस तरह से सभी लेखकों की प्रतिभा एवं राजभाषा हिंदी के प्रति उनका समर्पण भाव निःसंकोच परिलक्षित करने में हमारी पत्रिका का योगदान अतुलनीय है। हिंदी पत्रिका “सविता” इसी निरंतर प्रयास का प्रतिबिंब है।

कार्यालय के कर्मचारीगण राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में सक्रिय भूमिका निभा रहे हैं, जिसके लिए तहे दिल से उनकी सराहना की जाती है। पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य एवं उत्तरोत्तर प्रगति के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ ।

सभी पदाधिकारियों को भारतीय स्वतंत्रता के 75^{वें} वर्ष की हार्दिक बधाई ।

को प आनंद
प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा ॥)

संदेश



यह अत्यन्त गर्व एवं आनंद का विषय है कि हिंदी ई-गृह पत्रिका “सविता” के नवीनतम अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। विभिन्न सांस्कृतिक धरातल पर पनपी हिंदी भाषा हमारे देश की संस्कृति एवं संस्कारों का प्रतिबिम्ब है। पत्रिका के प्रकाशन से हिंदी के प्रचार एवं प्रसार को व्यापक एवं प्रभावी बनाने में सफलता प्राप्त होगी और कर्मियों को हिंदी में कार्य करने के साथ-साथ अपनी सृजनात्मकता एवं कौशल का प्रदर्शन करने का अवसर प्राप्त होगा। इस अवसर पर मैं रचनाकारों का हार्दिक अभिनंदन करती हूँ, जिन्होंने कोरोना महामारी एवं लॉकडाउन जैसी विषम परिस्थिति में भी हिंदी साहित्य का हाथ नहीं छोड़ा। यह अनुकरणीय एवं प्रशंसनीय है।

संपादक मण्डल को बधाई और पत्रिका की सफलता की मंगलकामनाएं।

शेरिन एम एस
वरि.उप महालेखाकार
(प्रशासन व लेप.प्र.स.।)

मुख्य संपादक की कलम से..



हिंदी ई-गृह पत्रिका का नवीनतम अंक प्रबुद्ध पाठकों के सामने प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है। पिछले दो वर्षों से चल रही प्रचंड महामारी से हुई सुस्ती और उदासी से अब तक हम “नए सामान्य” से अभ्यस्त हो गए हैं। ऐसे कठिन समय में हममें से बहुत से लोग अपने उलझे हुए विचारों और भावनाओं को कागज़ पर उतारकर उन्हें शांत करने और सांत्वना पाने का प्रयास कर रहे हैं। इस अंक में हमने कहानी, कविता, यात्रा वृत्तांत, लेख, कार्यालय के विभिन्न कार्यक्रमलाप, लेखापरीक्षा रिपोर्ट के सारांश, पेंटिंग जैसे विभिन्न पहलुओं के साथ सभी संवर्ग के पदाधिकारियों की रचनाएं भी समाहित की हैं जो इस अंक की समग्रता में चार चाँद लगाता है। हमारे रचनात्मक कार्यों, उत्साहपूर्ण विचारों और काव्यात्मक प्रयासों का यह संकलन, राजभाषा के प्रति हमारी निष्ठा एवं आदर का द्योतक है। राजभाषा की सेवा अर्थात् देश की सेवा है। इसलिए यह संग्रह राजभाषा के चमचमाते शानदार खज़ाने के लिए हमारी विनम्र भेंट बन जाता है। हम आपके बहुमूल्य सुझावों, सराहनाओं और रचनात्मक आलोचनाओं को प्राप्त करने के लिए तत्पर हैं ताकि इस पत्रिका को और बेहतर एवं सार्थक बनाया जा सके ...

जय हिन्द ! जय हिन्दी !

डॉ. डी. अनीष

वरिष्ठ उप महालेखाकार/ प्रशासन

अनुक्रमणिका

1. **पीपल के झरोखे से**
श्री रतीष आर, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
2. **वर्षा ऋतु**
सुश्री नीरू त्रिपाठी, आशुलिपिक ग्रेड II
3. **किनसुगी**
श्रीमती उषा बेटी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
4. **समय बड़ा अनमोल**
श्री अनुराग शुक्ला, लेखापरीक्षक
5. **निशब्द**
श्रीमति के एन बिन्दु, सहायक पर्यवेक्षक
6. **कोविड 19 की स्थिति में सफाई कर्मियों की भूमिका**
श्री सजीव कुमार(सं.2), सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी
7. **दस तक गिनो**
श्रीमति अनु जोस, वरिष्ठ उप महालेखाकार (ए एम जी II)
8. **माँ**
सुश्री मालविका जे आर, सुपुत्री राखी पी.ओ,
सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी
9. **घर से दूर**
श्री पारितोष चौधरी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
10. **चित्र- एक विचित्र विस्मयकारी रंगीन सफर**
श्री जे.ए साईकुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
11. **बोझिल जीवन**
श्रीमती राधिका टी.वी, वरिष्ठ हिंदी अनुवादक
12. **सनसनीखेज़...हैरतअंगेज़...अगस्त्यकूडम**
श्री अनीष डी, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)



आवरण पृष्ठ: श्री शंकर एस कुमार, श्रीमती विष्णुदेवी राजसेनन, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी के ज्येष्ठ पुत्र हैं। पेशे से एचआर प्रोफेशनल शंकर को तस्वीरें खींचने का भी शौक है। एक स्व- प्रशिक्षित फोटोग्राफर, जिसने अपने सफर की शुरुआत मोबाइल कैमरे से की, उनकी रुचि घूमने फिरने और वन्यजीवों को अपने कैमरे में कैद करने में है। उनका सपना केरल के राज्य पक्षी "ग्रेट हॉर्नबिल" की तस्वीर लेना है।

13. **आत्म अनुशासन**
श्रीमती रश्मी शशिकुमार, पर्यवेक्षक
14. **ओणम**
श्री सिद्धार्थ के अजीत, एम टी एस
15. **आपबीती**
सुश्री अनिता दास, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
16. **भगवान का इंसाफ**
श्रीमती अंजुम ज़हरा,
पत्नी श्री सादत हुसैन रिज़वी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
17. **सादत हसन मंटो**
श्री आशिष कुमार, वरिष्ठ लेखापरीक्षक
18. **मेरे दादा-दादी**
जेनिफर जॉन,
सुपुत्री उषा बर्टी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
19. **नदियाँ**
सुश्री ए एन देविका,
सुपुत्री जी सी नारायणन पोट्टी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
20. **स्वतंत्रता - आत्मनिर्भरता**
सुश्री काव्या प्रसन्नन,
सुपुत्री श्रीमती एस लक्ष्मी, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
21. **मरने के बाद - स्वर्ग नरक से पहले**
श्री सादत हुसैन रिज़वी, कनिष्ठ हिंदी अनुवादक
22. **समय का सदुपयोग**
एस अपर्णा सरस्वती
सुपुत्री वी सुरेश, स.लेखापरीक्षा अधिकारी
23. **नदी**
सुश्री नीरू त्रिपाठी, आशुलिपिक ग्रेड II
24. **रिपोर्ट**



पीपल की झरोखे से ..



आर रतीश
स. लेखापरीक्षा अधिकारी

मुझे अपनी उम्र का एहसास नहीं, लेकिन एक लम्बे अर्से से इस गौरवशाली संस्थान की तरक्की का गवाह रहा हूँ। भारतीय लेखापरीक्षा एवं लेखा विभाग के इस विशाल परिसर के बीचो-बीच खड़े मेरा हम उम्र मित्र आम का पेड़ और मैं इस परिसर का गौरव रहे हैं।

आपको पता है...जब 1970 के दशक में इस बहुमंज़िला इमारत के निर्माण को अंतिम रूप दिया जा रहा

था तो सिर्फ़ मेरी रक्षा के लिए इसका अभिविन्यास बदल दिया गया था जो भा.लेप.और ले.वि. का मेरे प्रति स्नेह एवं गर्व ज़ाहिर करता है। बस तब ही से, मेरे कंधों से कंधा मिलाकर लेखापरीक्षा भवन मेरा दोस्त बन गया है। जब लेखापरीक्षा भवन से झांकती हुई आंखें मेरी टहनियों और शाखाओं से गुज़रती सूरज की रौशनी का आनंद लेती हैं.... तो.... उनकी मुस्कुराहट सब

कुछ बयान कर देती है अहा..! कितनी स्वाभाविक और सुकून देने वाली।

खैर, वैसे मैं पीपल (फ़ाइक्स रेलीजियोसा) का पेड़ हूँ जो और भी कई नामों से जाना जाता है जैसे बोधिवृक्ष, पिप्पल वृक्ष, पीपल, अश्वत्थ का वृक्ष, पीपल का पेड़, सेक्रेड फ़िग; केरल में यह अरयाल के नाम से मशहूर है। ऐसा माना जाता है कि मेरे ही पूर्वजों में से एक की छांव के साये में गौतम बुद्ध को

ज्ञान की प्राप्ति हुई इससे ज़ाहिर होता है कि मेरे पूर्वज सदियों से रहे हैं और क्या आप जानते हैं हमारी उम्र 1000 से 1500 वर्षों तक की होती है, ये और बात है कि....मेरे पास कोई जन्म प्रमाणपत्र नहीं है मैं ये भी नहीं जानता कि कितने युगों से मैं यहां पर विद्यमान हूँ, बढ़ती उम्र के साथ बहुत सी यादें धुंधली हो चुकी हैं लेकिन गौरव के क्षणों को मैंने फिर भी संजोके रखा हूँ।

1949 में, जब श्री पी एन पद्मनाभ पिल्लई, महालेखाकार, त्रावणकोर - कोचीन राज्यों के विलय वाले राज्य के एकीकृत कार्यालय के प्रमुख बने, मैं तब भी यँ ही खड़ा रहा और उस ऐतिहासिक क्षण का गवाह बना। वरिष्ठ उप महालेखाकार के तौर पर पदभार संभालने वाले श्री के गोविंदा मेनन ने उनका पूरा सहयोग किया।

एक बार मैंने सुना, एक व्यक्ति मुझसे मुखातिब हो कह रहा था “मैं 32 वर्ष की सेवा के बाद सेवानिवृत्त हो रहा हूँ नौकरी के इस पूरे कार्यकाल में तुमने कभी भी मेरे लिए मुस्कुराना नहीं छोड़ा और हरा-भरा और विशाल रहकर मुझसे जुड़े रहे लेकिन मेरे दोस्त, आज मैं दुखी हूँ क्योंकि मैं तुम्हारी हरी-भरी छत्र-छाया, लहराती शाखाएँ, शांतिदायक पत्तियाँ, दिल को सुकून देने वाली हवा और चमकती हुई धूप को हमेशा बहुत याद करूँगा। तुम मेरी ज़िन्दगी का एक हिस्सा रहे हो, जब भी मैं उदासी या अकेलापन महसूस करता हूँ तुम मुझे अपनी शाखाओं को हिलाकर व गिरती हुई पत्तियों के सहारे दिलासा देते हो। मेरी खुशी के मौके पर हमेशा तुम अपनी हवा से लहराती हुई पत्तियों से मेरे लिए गीत गुनगुनाते से प्रतीत

होते रहे।

एक वक्त ऐसा आएगा मेरे दोस्त जब मैं यहां से चला जाऊँगा लेकिन तुम सदियों तक यहां रहोगे... मुझे कभी भूलना नहीं और मेरे सहयोगियों, नए पेड़ों पर और इस गौरवशाली संस्थान पर अपना प्यार और सहानुभूति बरसाते रहना।”

“मेरे कार्यालय” के परिवर्तनकाल, जी हाँ...मैं पूरे दावे से कह सकता हूँ “मेरा कार्यालय”, जो 1950 में त्रावणकोर और कोचीन के नियंत्रक के रूप में नामित हुआ, 1956 में केरल राज्य के जन्म के बाद, महालेखाकार कार्यालय के रूप में उन्नयन, और 1984 में लेखा एवं लेखापरीक्षा कार्यालयों के रूप में पुनर्गठित हुआ, यह सब मैंने अपनी आंखों से देखा है।

मैंने अपनी बहुत सारी पत्तियाँ खोईं लेकिन कभी उदास नहीं हुआ लेकिन भा.लेप.और ले.वि. के कर्मियों के लिए ऐसा नहीं कह सकता। नए साथियों की सम्मोहित करती निगाहें जिन्हें मैंने दुलारा, नमी दी.... दिल पे पत्थर रखके सेवानिवृत्त होने वाले साथियों को विदाई दी इनमें कई ऐसे थे जिन्होंने मेरे सामने अपनी सेवाएं दीं और किसी ने भी कम से कम एक बार मुझे देखे बिना अपना अंतिम कदम इस परिसर से बाहर नहीं रखा।

कभी-कभी मुझे ये सोचकर अफ़सोस होता है कि मैं अपनी जगह से हिल नहीं सकता, और ये वाकई दुखद है कि अपने कोट्टयम, कोच्चि, तृशूर एवं कोप्रिकोड स्थित शाखा कार्यालयों का दौरा नहीं कर सका।

इस महान संस्थान से मेरे गहरे

संबंधों का अंदाज़ा इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसके परिसर में घटी कालानुक्रमिक घटनाओं पर मैं एक किताब लिख सकता हूँ और वो भी इतनी सटीकता से कि इतिहासकार भी मेरी व्याख्या पर सवाल नहीं उठा पाएंगे। मैं इस परिसर के सुकून भरे माहौल में रहकर बेहद प्रसन्न और ईश्वर का शुक्रगुज़ार हूँ, यह कहते हुए फ़ख़ हो रहा है कि यह कार्यालय पहले भी मेरा घर था और हमेशा रहेगा।



सुश्री नीरू त्रिपाठी
आशुलिपिक ग्रेड-II

वर्षा ऋतु

वर्षा ऋतु, तू ऋतुओं में लगे मुझे सबसे प्यारी
तेरे आने से खेत-खलिहानों में आयी हरियाली
रंग-बिरंगी कलियाँ खिल उठी हैं।
मानो धरा ने हरी चुनर ओढ़ रखी हो
जिसमें किसी ने रंग बिरंगी गोटे हो टांके
नई नवेली दुल्हन बन, धरा मुस्कुराई।
तेरी छोटी-छोटी बूंदें वातावरण को धोएँ
नीले आसमाँ पर इन्द्र-धनुष ने डाले डेरे
सूखे पड़े तालाब, झील, पोखर सब भर उठे हैं
कल-कल करने लगी नदियाँ, झर-झर बहने लगे झरने
नाविकों की बंद नाव, फिर से दौड़ पड़ी है
बीज अंकुरित हो उठे, बंजर धरा बनी उपजाऊ
पीले-पीले पल्लव हरे हो गए, फसलें सारी लहलहाई,
अपनी बूंद-बूंद से वर्षा भरती तू नवजीवन की गागर।
झम-झम करती वर्षा, मानो पायल पहन थिरक रही हो
सर-सर करती हवा, ताली ठोक रही हो,
बादल का गरजन, बजा रहे हो वादन
कुहक-कुहक गाये, ठुमक-ठुमक नाचे मोर
पीपी-पीपी करे पपीहा, टीटी-टीटी करे टिटहरी
झन-झन करता झींगुर, टर्-टर् टर्ता मेंढक
टिप-टिप पड़ती बूंदें, करती हों सहगान जैसे
प्रकृति की ऐसी मधुर धुन, तू अपने संग लायी।
तू जीवन दायिनी है, तेरे बिना नहीं धरती का आधार
पेड़-पौधे, जीव-जन्तु और प्रकृति भी, सभी करें तेरा इंतज़ार,
वर्षा ऋतु, तू ऋतुओं में लगे मुझे सबसे प्यारी ॥

किनसुगी



श्रीमती उषा बर्ती
वरि.लेखापरीक्षा अधिकारी

पुराने ज़माने से ही हर घर में एक शोकेस होता है, जहां हम अपनी अमूल्य चीज़ों को प्रदर्शित करते हैं - फ्रेमयुक्त तस्वीरें, सुंदर बर्तन, चीनी मिट्टी के कटोरे, कांच के सुंदर कला संग्रह आदि। जब कभी हम उन चीज़ों को देखते हैं, मन खुशी से भर जाता है। लेकिन अगर उनमें से एक कांच का कटोरा या चीनी मिट्टी के कटोरे हमारे हाथ से गिरकर टूट जाए तो हमें बहुत दुख होता है। टूटे हुए टुकड़ों को हम भारी मन से इकट्ठा करके कूड़ेदान में फेंक देते हैं। उस कीमती चीनी मिट्टी के कटोरे को संभालने में हमसे जो लापरवाही हुई, उसके बारे में सोच-सोचकर हम स्वयं को सताते रहते हैं। यही बात टूटे रिश्तों पर भी लागू है। जब रिश्तों में दरारें आ जाती है, तब हमारा दिल उदास हो जाता है। हम अपने आपको दोषी मानते हैं और अंदर ही अंदर बहुत मायूसी का अनुभव करते हैं। अपनी तकदीर को दोषी ठहराकर, लोगों से अपना दर्द और कमज़ोरियों को छिपाने की कोशिश करते हैं।

क्या इस स्थिति को अलग तरीके से संभाला जा सकता है? हमें कैसे आश्वस्त किया जा सकता है कि हम गैर-ज़िम्मेदार होने के लिए खुद को दोषी नहीं ठहराएंगे और गलती के लिए कभी न भूलने वाले अफसोस को दूर करेंगे। क्या होगा जब हम उस टूटे हुए टुकड़े को जोड़ने में सफल हो और शोकेस में प्रदर्शित करने हेतु योग्य एक सुंदर कला सृष्टि के रूप में परिवर्तित कर दें। क्या होगा अगर हम टूटे रिश्तों की आपसी गलतियों को माफ कर दें और खुद को मानसिक तनाव के अधीन होने से बचाएं।

‘किनसुगी’ के बारे में आप लोगों ने सुना होगा। क्या है ‘किनसुगी’ !!!? ‘किनसुगी’ टूटे हुए मिट्टी के बर्तनों की मरम्मत करने की एक जापानी कला है जिसमें टूटे हुई सतहों को लाह या सोने के चूर्ण के मिश्रित से जोड़ा जाता है। जापान में टूटे हुए बर्तनों को फेंक देने की बजाय उसे सोने या चांदी के एक मिश्रण से जोड़ कर उससे और सुंदर कलासृष्टि करते हैं और निराला बना देते हैं।

किनसुगी हमें सिखाती है कि खामियों से परेशान होने की ज़रूरत नहीं है, बल्कि उन खामियों से हमें हिम्मत और प्रेरणा लेनी चाहिए। हम मानव हैं, कोई भगवान नहीं। गलती करना मानव स्वभाव है। गलतियां तो मानव से हो जाती हैं। उसे स्वीकार करके सुधार करना हमारा कर्तव्य है। टूटेपन को हम एक वरदान में बदल सकते हैं, जो हमें याद दिलाता है कि हम भी ऐसी कठिन परिस्थितियों को पार करके आए हैं।

खुदरन में पाये जाने वाले हीरा, सोने, चांदी आदि कच्चे रूप में अपूर्ण होते हैं। उसमें अशुद्धता एवं अपूर्णता होती है। लेकिन जब वे कटाई, छटाई, पॉलिश जैसी प्रक्रिया से गुज़र जाते हैं, तो वे चमकती हुई एक अमूल्य वस्तु बन जाते हैं। ठीक उसी प्रकार हम भी टूटे हुए रिश्तों में गलतियों को भूलकर उसे एक अच्छे रिश्ते में बदल सकते हैं। हमें खुद को और दूसरों को माफ करना सीखना चाहिए।

किनसुगी हमें याद दिलाता है कि हमारा जीवन अमूल्य है, उसे अच्छे से संभालना है। वैसे ही रिश्ते भी अमूल्य हैं। कमज़ोरियों एवं गलतफ़हमियों की दरारों को प्यार और माफी के मिश्रण से भरना है। तब हम अपने जीवन के अमूल्य रिश्तों को कायम रख सकेंगे।

समय बड़ा अनमोल



श्री अनुराग शुक्ला
लेखापरीक्षक

समय कम है, समय अधिक है, समय निकल गया, समय आ ही नहीं रहा...आदि। इस 'समय' शब्द से हम सभी की कोई न कोई इच्छा/ शिकायत अवश्य रहती है, जबकि सच्चाई यह है कि समय सबके पास एक समान है-कोई भेदभाव नहीं।

समय एक अनमोल मित्र की तरह सदैव हमारे साथ चलता है। वह बहुमूल्य है, लेकिन कभी अपनी कीमत नहीं मांगता, वह तो चुपचाप अनवरत चलता रहता है। यह भी एक अद्भुत विडंबना ही तो है कि शिकायत भी समय के कम होने की ही है और अगर वो कछुआ भी अपने समय को यही सोचने में व्यर्थ कर देता कि वह कदापि एक खरगोश के वेग को पराजित नहीं कर सकेगा, तब वह कभी हमारे पाठ्यक्रम का हिस्सा नहीं बन पाता, वह तो समय की निरन्तरता की भांति अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करता रहा और अंततः असंभव को भी संभव कर दिखाया।

मानव मन अत्यंत चंचल होता है, पल भर में विचलित हो जाता है। यदि हम समय रूपी मित्र के अनुशासन से प्रेरित होकर अपने मन की ऊर्जा को 'कार्य कैसे नहीं हो सकता है?' से 'कार्य कैसे हो सकता है' पर केन्द्रित करें, तब हम सब असंभव को संभव बना सकने में सक्षम होंगे। अवश्य ही आप सोच रहे होंगे कि यह तो एक कपोल कल्पना मात्र है। विश्वास कीजिए यदि आप अपनी दिनचर्या में (घर, ऑफिस या अन्य स्थान) कोई भी कार्य 'कैसे होगा', 'नहीं हो सकता' में अधिक

समय बिताने के बजाय उस कार्य को करना शुरू कर दें, तो धीरे-धीरे परिस्थितियां भी उस कार्य के पूर्ण होने की ओर दिशा देती है और समय तो उतना ही है- न कम और न ज्यादा !



हम प्रायः अतीत में हुई घटनाओं को अपने आप पर हावी होने देते हैं और 'तनाव' रूपी विकार को आमंत्रित करते हैं। परिणामस्वरूप अपने वर्तमान एवं भविष्य दोनों के विकास में बाधा का कारक बन जाते हैं। वर्तमान में 'तनाव' मानव जीवन के लिए सबसे जटिल चुनौती है। हमें अतीत की घटनाओं का उपयोग 'सीखने' और 'आगे बढ़ने' के लिए करना चाहिए, न कि उनमें उलझकर अपने विकास में बाधा हेतु। जीवन में छोटे-छोटे लक्ष्य निर्धारित करके उनको हासिल करने में ऊर्जा का उपयोग करना चाहिए। परन्तु ध्यान रहे शुरुआत कल से नहीं आज से करनी है,

क्योंकि कल न आया है और न आएगा।

हमारे पास समय एक गिलास पानी की भांति है, जो आधा भरा हुआ है और जो भाग रिक्त है, वह बीते हुए समय की भांति है एवं भरा हुआ भाग आपके उपयोग हेतु है, अब इसका उपयोग अपने जीवन को सींचने में करना है, अथवा खाली भाग के बीत जाने के शोक में उलझकर अपने वर्तमान को अंधकार से भरना है- निर्णय आपको लेना है।

निशब्द



के एन बिंदू
सहायक पर्यवेक्षक

भूमि देवी की गोद में
मेरा यह नन्हा सा जन्म
दिल के दर्द को न पहचाने
कोई न जाने.....
बरस कर थम जाने वाली व्यथा यह
फिर भी मौन मैं ।

मेरे मोह और मेरे सपने
कोई भी ना जाने
अपने मन के रहस्य हिस्सों में
निःशब्द छिपाए रही मैं ।

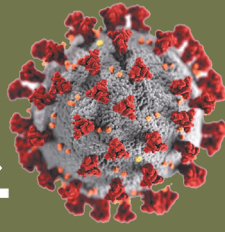


कोई भी नहीं इस भू पर
जो मेरे शब्दों पर ध्यान दे
मेरे दर्दों को बाँट ले
कहने को बहुत है.....
लेकिन मौन मैं ।

जीवन मूल्यों को कायम रखने को
खामोश हूँ मैं, चार दीवारी में
कराहते मेरे दिल को....
न देखा किसी ने आज तक
“निशब्दता” तुम मेरे साथ रहोगी
इस जीवन में अंत तक ।

रिश्तों के लिए...प्रतिबंधों के लिए...
मूल्यहीन इस धरा पर
मैं अपने शब्द क्यों कहूँ व्यर्थ
एक हज़ार शब्द कहने से
बेहतर है...
मेरा मौन रहना
मैं जानती हूँ यह ।

कोविड-19 की स्थिति में सफाई कर्मियों की भूमिका



श्री एन सजीव कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कोरोना महामारी में वृद्धि और भय दुनिया को उल्टा कर दिया है, जिससे लोगों को अलगाव और होम क्वारंटाइन का सहारा लेना पड़ रहा है। जबकि अधिकांश लोग घर पर समय बिता रहे हैं, काम कर रहे हैं और आराम कर रहे हैं, स्वास्थ्य कार्यकर्ता, डॉक्टर, नर्स, पुलिस और अस्पताल के कर्मचारी चौबीस घंटे काम कर रहे हैं ताकि लोगों को कोविड-19 के प्रकोप से लड़ने में मदद मिल सके।

इस समय हमारे कार्यालय में सफाई कर्मचारियों की भूमिका बहुत ही सराहनीय है। अन्य चिकित्सा योद्धाओं और पुलिस की तरह कोविड-19 से डरे बिना किसी हिचकिचाहट के बिना उच्च समर्पण और जिम्मेदारी के साथ अपने कर्तव्य का पालन कर रहे हैं।

सफाई कर्मचारियों की 18 मेहनती महिला टीम कोविड-19 के खिलाफ लड़ने के लिए हमारे कार्यालय की मुख्य ताकत है। आम तौर पर वे कार्यालय शुरू होने से पहले सुबह जल्दी काम शुरू कर देती हैं, अपने काम को इन 18 तेजतर्रार महिला बलों के बीच बांटती हैं और बिना किसी शिकायत का मौका दिए उसे तुरंत अंजाम देती हैं।

खुले मैदान की सफाई से लेकर

कचरा उठाने, डंप करने, कार्यालय परिसर, शौचालय, कार्यालय कक्ष आदि की सफाई से लेकर हर घंटे में सीढ़ियों, लिफ्ट और सीढ़ियां पकड़ने वाले डंडे की सफाई केमिकल से करके कर्मचारियों को इस संक्रमण से बचाने के लिए मदद कर रही हैं।

कार्यालय में कोविड-19 के कई मामलों के बावजूद, हमारे कार्यालय में सफाई कर्मचारी न केवल खुद को स्वच्छ और कोविड-19 से मुक्त रखने के लिए बहुत सतर्क थे, बल्कि अपनी ईमानदारी व समर्पण के साथ बहुमत को बचा के रखने में काफी हद तक योगदान दिया है।

कोविड विस्तार के बाद सीमित यात्रा सुविधाएं होने के बावजूद पदाधिकारियों द्वारा निर्धारित समय पर कार्यालय और उसके आस-पास सफाई करने का उनका जोश अवर्णनीय है। इसलिए हम अपने कार्यालय में कोरोना वायरस से लड़ने में सक्षम हुए।

वे हमारे कार्यालय के प्रति समर्पण के साथ सरकार के कोविड मानकों (सफाई) को पूरा करने के लिए अथक

प्रयास कर रहे हैं। यहां तक कि अपनी जान के बारे में सोचे बिना वे अपना कर्म पूरा कर रहे हैं। उनकी सेवा उतनी ही महत्वपूर्ण है जितनी मेडिकल स्टाफ



या पुलिस बल की कोविड के खिलाफ लड़ने में हैं।

इतनी ईमानदारी के साथ अपना काम करने वाली महिलाओं के इस समूह की कितनी भी प्रशंसा की जाए वह कम है। हम गर्व से कह सकते हैं कि उनकी निःस्वार्थ सेवा के कारण, हम अपने कार्यालय को कोविड-प्रवण कार्यालय न बना कर प्रतिबंध कर सके। हम सब मिलकर उनकी सलामती और खुशहाली के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते हैं।

दस तक गिनो



श्रीमती अनु जोस
व. उप महालेखाकार

तीन साल वाला मेरा बेटा अपने आयु के अनुसार नटखट है। वैसे पहले तो उसके दो ही भाव थे - दुःख और खुशी। लेकिन आजकल एक नया भाव वह प्रकट कर रहा है - गुस्सा। उसकी बुद्धि यह समझ नहीं पा रही है कि इस नए भाव का वह करें क्या। एक दिन उसका गुस्सा शांत करने के बाद मैंने बोला “बेटा, जब भी गुस्सा आएँ तो एक से दस तक गिनना। तब तक गुस्सा चला जाएगा।”

बेटा बहुत ही समझदार निकला। कम से कम गुस्से के आधे अवसर पर वह एक से दस तक (जो भी संख्या उसे तब याद आता था) गिन लेता ही था। गुस्सा तो कम हो गया लेकिन नटखटपन बढ़ता ही गया। गुस्सा अब मुझे और पतिदेव को आने लगा।

एक बार बन्दे ने खिड़की से नीचे कूदने की कोशिश की। अगर ज़मीन पर जा पटकता तो कुछ ज़्यादा ही बड़ी चोट लग सकती थी। पतिदेव ठीक समय पर वहाँ पर थे और उन्होंने सुपरमैन को धराशायी होने से पहले पकड़ लिया। बहुत बार चेतावनियाँ हम दोनों उसे दे चुके थे। पतिदेव की मानो तीसरी आँख खुलने वाली थी।

लेकिन अपना संयम संभाल कर पतिदेव बेटे से बोले “बेटा, मैं तुमसे बहुत बार बोल चुका हूँ कि ज़्यादा ऊँचाई से कूदना नहीं चाहिए। तुम सुनते नहीं हो। मुझे बहुत ज़्यादा ही गुस्सा आ



रहा हूँ। तुम ही बता दो कि मुझे क्या करना चाहिए?”

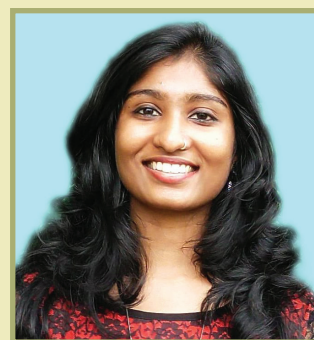
बेटा, बिलकुल ही निश्चिन्त होकर बोले “एक से दस तक गिन लो पापा ! गुस्सा तब तक चला जाएगा। “

धन्य हैं हम ऐसा पुत्र पाकर। आधे बाल अब तक झड़ चुके हैं। यही आशा है कि जब तक यह 18 का हो जाएँ, कम से कम थोड़े तो बचें।

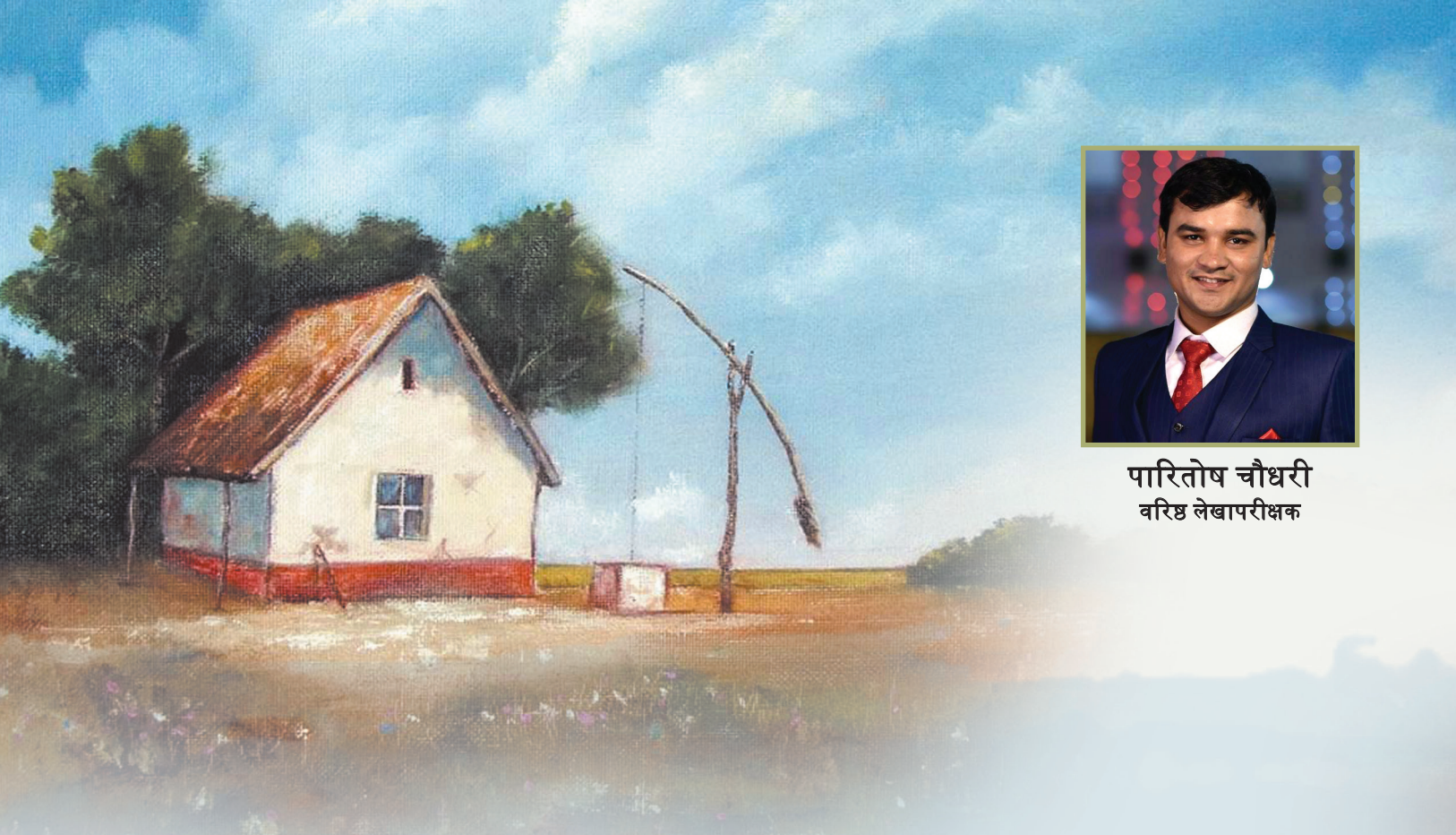


माँ

पहली बार जब मैंने दुनिया को देखा,
तब ऐसा एहसास हुआ कि
दुनिया की हर चीज़ की तुलना माँ से करना आसान है
लेकिन माँ सबकुछ है।
माँ वो बादल है,
जो प्यार की बूंदों से
सबका मन भरना चाहती है।
माँ वो हवा है,
जिसकी वजह से ज़िदगी बहती रहती है।
माँ वो मिठास है,
जिसके होठों पर हमेशा दुआ में आस रहती है।
माँ वो बारिश है,
जिसके आँसू से दुनिया भर के मंदिर पुनीत हो जाते हैं।
माँ वो ज़िदगी है,
जिसमें सुख, दुख,
त्याग और प्यार की रोशनी मिली हुई है।
माँ वो इंसान है,
जो जीवन भर प्यार के अलावा कुछ नहीं चाहती।



मालविका जे आर
सुपुत्री राखी पी.ओ,
सहा.लेखापरीक्षा अधिकारी



पारितोष चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

घर से दूर

जब घर से दूर कोई जाता है तो वह अपने जीवन में एक बेहद कठिन फैसला लेता है। वैसे सब घर से बाहर जाना चाहते हैं। परन्तु जब वक्त आता है तो सबसे पहले विचार आता है अपने माता-पिता का। माता-पिता जिन्होंने जन्म से लेकर अब तक पढ़ाया, लिखाया, अपने पैरों पर खड़ा होना सिखाया। अब इन से दूर जाने का दिल नहीं करता लेकिन अपने आप को समझाना और स्वयं को काबिल बनाने के लिए घर से दूर जाना पड़ता है। घर पर रहने के अलग ही अपने फायदे होते हैं। घर पर माँ के हाथ के खाने का अलग ही अपना मज़ा होता है। लेकिन घर से दूर रहने

पर अपनी ज़िम्मेदारियों को समझने का मौका मिलता है। स्वयं को, अपने खानपान, कमरे की साफ-सफाई और पढाई के साथ-साथ अपनी सेहत का भी ख्याल रखना पड़ता है। घर से दूर रहने पर हमेशा आपको अन्वेषण करने का मौका भी मिलता है।

घर से बाहर रहने पर हमें अपने मित्रों की सहायता लेना और करना दोनों सीखने का मौका मिलता है। लेकिन मित्रता एक चीज है कि अगर आपको सही मित्रता मिली तो आप अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ सकते हैं और अगर गलत हो गई तो जिन्दगी को बर्बाद भी कर सकती है। इसलिए माता-

पिता हमेशा घर से दूर अपने बच्चे को भेजते वक्त यही चिन्तित रहते हैं कि कहीं मित्रता और आदतें बच्चे की जिन्दगी बिगाड़ न दें। घर से दूर रहना बेहद कठिन भी होता है। हर जगह के लोगों को अपनाना भी सीखना पड़ता है। और अनेक प्रकार और परिस्थितियों के अनुसार चलना भी सीखना पड़ता है।



साई कुमार जे ऐ
वरिष्ठ लेखापरीक्षक



चित्रकारी या चित्रकला या चित्र हर कोई व्यक्ति के मन को प्रसन्नता देते हैं। कुंची को रंग में डुबाकर, घसीटकर किरमिच या अधिक प्रचलित शब्द - कैनवास पर रचकर कई भिन्न प्रकार के वर्णों से आकृतियाँ बना सकते हैं। बस अम्बर ही चित्रकार की कल्पनाओं और भावनाओं की सीमा होती है। ऐसा कोई व्यक्ति या इंसान नहीं है जिन्हें चित्रकला पसंद न हो। चित्रकारी कोई आधुनिक कला नहीं है। अति प्राचीन कला है। अजंता और एलोरा में भी पुरातन चित्रकला के नमूने देखे जा सकते हैं। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध चित्रकार के तौर पर केरला के राजा रवि वर्मा का नाम लिया जाता है।

हर चित्रकार का अपना एक अंदाज़ होता है। कोई पानी में घुलने वाले रंगों से रचना करते हैं और कोई तूलिका या पेंसिल से चित्र बनाते हैं।



चित्र - एक विचित्र विस्मयकारी रंगीन सफर



और कोई तेलिया-रंग या आयल पेंट्स का इस्तेमाल करते हैं। अपनी बात कहूँ तो बचपन से तेलिया रंग से ही आरंभ हुआ ये जीवन, तेलिया रंगों से ही चलता आ रहा है। मगर बीच में कुछ अन्य माध्यम अपना के देखा लेकिन जो आकर्षण तेलिया रंगों में है अन्यो में महसूस नहीं हुआ है। सचमुच, यह सत्य है। कुछ लोगों का कहना है कि यह कला हर किसी को सिद्ध नहीं होता है। मगर कुछ कलाकार जन्म सिद्ध कलाकार होते हैं। उनकी कल्पना शक्ति और दृष्टिकोण कुछ अलग ही होते हैं। औपचारिक अध्ययन किए बगैर स्वयं कल्पना और संघर्ष से उभरे कलाकार भिन्न होते हैं। विश्व में प्रसिद्ध चित्रकार जब जीवित थे, उतने प्रसिद्ध या विख्यात नहीं थे। सारे चित्रकार बीसवीं शताब्दी में ही ज्यादा प्रसिद्धि पायी। उनकी कलाकृतियों को प्रत्येक रूप से एक पहचान मिली। एक शैली का दर्जा मिला है।

लगभग आज तक 100 से ज्यादा कलाकृतियाँ बना चुका हूँ। हर बार एक अलग

परीक्षा है। जब रसोई में इस्तेमाल होने वाला आम प्याज, एक सब्जी, उसके सही रंग की मिलावट पाने के लिए कई दिन, हफ्ते और महीने लग गए हैं। और तो और धरती के जानवर, गजराज या हाथी का चित्र बनाने में पूरे एक साल का समय लगा है। इन चित्रों को बनाते समय, मन, विचार और बुद्धि का संतुलन काफी आवश्यक है। मानसिक स्थिरता भी जरूरी है। एक साल तक मानसिक संतुलन बनाए रखना कठिन है। यह कोई तपस्या से कम नहीं है। जितनी सुन्दर और आकर्षक चित्रकारी दिखती है, उसको बनाना उतना आसान नहीं है। मगर नामुमकिन भी नहीं है। ये दो चित्र काफी प्रसिद्ध और लोकप्रिय हुए। इसके अलावा अंडा और शुक्राणु का चित्र, कमबख्त हृदय, जो एक बिलकुल अलग तरह का चित्र है, उतना ही प्रसिद्ध है। चित्र बनाते और वह पूरे करने के बाद के समय का आनंद अवर्णनीय है, वह एक सुखद अनुभूति होती है। एक चित्रकार ही इसको महसूस कर सकता है।

सात साल की आयु में पहला तेलीय रंग या आयल पेंट्स का चित्र बनाना, बाद में 14 साल की आयु में एक योगिनी का

चित्र से प्रशंसा पाना, चित्रकला की ओर जीवन का सफर तब आरंभ हुआ था। अब मुझे बीस से ज़्यादा चित्रकला प्रदर्शन का अनुभव है जिसमें स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रदर्शन भी शामिल है। चित्रकला प्रदर्शन हर चित्रकार के लिए बड़े ही गौरव का विषय होता है और उससे जो आनंद मिलता है वह अवर्णनीय होता है जैसे कि सातवें आसमान में हो। प्रदर्शन में कलाकृतियों के बारे में चर्चा और प्रशंसा से एक अनोखी खुशी व प्रेरणा हमें मिलती है।

चित्रकला एक तरह से तनाव से छुटकारा देती है और हृदय को उल्लास प्रदान करती है। एक कलाकार होना वास्तव में विस्मयकारी होता है क्योंकि हमें नया कुछ बनाने को मिलता है यानि कि हमें सृष्टा बनने का मौका मिलता है जी हां ये सच है। आप भी अपने अंदर छुपे कलाकार को जगाइए।



हिंदी ई- गृह पत्रिका 'सविता' की डिजिटल प्रति का विमोचन करते हुए
श्री को.प.आनंद, प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा II)

बोझिल जीवन



राधिका टी वी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

जागने और सोने के बीच के अंतराल को
क्या कहा जा सकता है ज़िन्दगी
कितनी बोझिल होती हैं रातें,
दिन भी गुजरते हैं उतने ही तीक्ष्ण
एकाएक सांसें थम जाती हैं नींद उड़ जाती है
गला रुद्ध हो जाता है,
अपरिचित और अकारण दुःख
बहा ले जाता है मुझे अपनी गहराईयों में
दह उठती आंखें मेरी, आंसू हो जाते हैं लुप्त
एक क्रंदन मेरे सीने में ही मर जाता है ..

एक बूंद भी भड़ककर नहीं आता,
इन आंखों की जलन को नम नहीं करता ...
अंजाने से एक डर ने झकझोर कर रख दिया है
उस मंज़र पर लाकर छोड़ दिया है
जहां तक हैं जाती नज़रें घनघोर अंधेरा है छा गया
जाने किस आग में जलते-तपते हैं मन
फिर भी कोई चिंगारी रोशनी नहीं बिखेर रही
आधे फासले पर ही रस्ते कहीं हो गए हैं गुम,
अकेली बीच राह पर अकड़ी हुई खड़ी मैं
न जाने किस ओर किस्मत ले चली



श्रद्धांजलि

श्रीमती आइवान लॉरेंस
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी



डॉ अनीष डी
व.उप महालेखाकार

सनसनीखेज़.. हैरतअंगेज़.. अगस्त्यकूटम

केरल-तमिलनाडु राज्यों की सीमा के बीच, पश्चिमी घाट की सह्याद्री पहाड़ियों में स्थित अगस्त्यकूटम, जो अगस्त्यारकूटम और अगस्त्यमला के नाम से भी जाना जाता है, केरल के तिरुवनंतपुरम ज़िले में वन्यजीव अभयारण्य के भीतर एक 1868 मीटर (6129 फीट) ऊंची, केरल की दूसरी सबसे ऊंची चोटी है, यह अगस्त्यमला बायोस्फीयर रिज़र्व का एक हिस्सा है। यह “सप्तर्षि” ऋषि अगस्त्य मुनि का तीर्थस्थल भी है। पूरे पश्चिमी घाटों में जैव विविधता की सबसे समृद्ध सांद्रता में से एक होने की वजह से, यूनेस्को की एक विशेष पहल के तहत वन रिज़र्व की स्थापना की गई है। यह स्थान पक्षी देखने की चाह रखने वालों का स्वर्ग है और बाघों और हाथियों सहित सैकड़ों प्रजातियों के जानवरों का निवास है। रिज़र्व के सदाबहार वनों में हजारों प्रकार के औषधीय पौधे हैं।

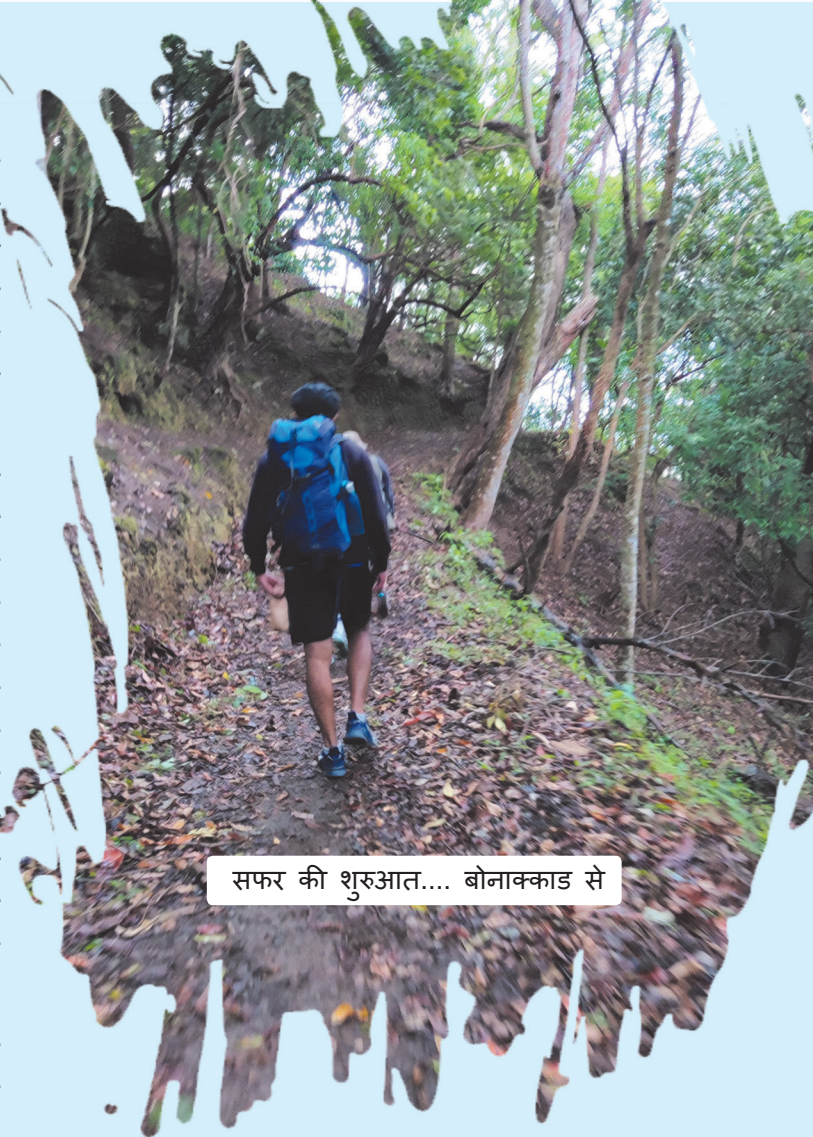
अगस्त्यकूटम ट्रेक भारत में सबसे चुनौतीपूर्ण गैर-हिमालयी ट्रेक में से एक है। इसके लिए 2 से 3 दिन तक लगातार धीरे-धीरे चढ़ाई करते

हुए 50 किलोमीटर की ट्रेकिंग की आवश्यकता होती है। शारीरिक रूप से मज़बूत जोशीले ट्रेकर्स के लिए भी रास्ते के कई हिस्से दुर्गम होते हैं। यह स्थान मानव बस्तियों से दूर है, यहां तक कि आधार शिविर तक पहुंचने के लिए भी पैदल मार्ग के अलावा कोई रास्ता नहीं है। पगडंडी बहुत पुरानी है और जंगली जानवरों से मुठभेड़ होने का खतरा हमेशा बना रहता है। आपात स्थिति या वन्यजीवों के हमले के मामले में, तत्काल सहायता या बचाव का कोई रास्ता नहीं है।

2018 तक, महिलाओं को अगस्त्यकूटम तक ट्रेक करने की या चोटी पर चढ़ने की अनुमति नहीं थी क्योंकि यह उनके लिए नामुमकिन माना जाता था। इसके अलावा, चोटी के आसपास के जंगल कानी जनजाति के घर हैं, जो अगस्त्य मुनी (जिसके नाम पर चोटी का नाम है) के प्राचीन उपासक रहे हैं। उनके अनुसार, अगस्त्य एक “ब्रह्मचारी” थे, और इसलिए महिलाओं को चोटी पर जाने की अनुमति नहीं थी, क्योंकि यही वह स्थान था जहां उन्होंने ध्यान किया था। केरल उच्च न्यायालय ने नवंबर, 2018 में एक ऐतिहासिक फैसला सुनाया, जिसमें महिलाओं के चोटी पर ट्रेकिंग करने से प्रतिबंध हटा दिया गया था। जनवरी, 2019 में, तिरुवनंतपुरम में रक्षा मंत्रालय की प्रवक्ता, धन्या सनल, अगस्त्यकूटम शिखर पर ट्रेकिंग शुरू करने वाली पहली महिला बनीं।

यह दो, तीन दिवसीय ट्रेकिंग का चुनौतीपूर्ण लेकिन रोमांचक सफ़र तिरुवनंतपुरम से लगभग 60 किमी दूर स्थित बोनक्काड वन कार्यालय से शुरू होता है। यहां से लगभग 15 किमी दूर अतिरुमला का आधार शिविर मौजूद है। आपकी रफ़्तार से ये तय होता है कि, आप यात्रा के इस चरण को कुछ घंटों में पूरा कर पाएंगे या पूरा दिन लगेगा। अतिरुमला से शिखर तक की यात्रा का दूसरा चरण ज़्यादा कठिन है और इसके लिए आपको 1000 मीटर की लगभग लंबवत दूरी मापनी होगी। हमने तीन दिवसीय ट्रेक का विकल्प चुना था। इस यादगार सफ़र में मेरे साथ, सुश्री मधुबाला, आई.ए.ए.एस. (डी.ए.जी, फंड्स), सुश्री धन्या सनल, आई.आई.एस (प्रवक्ता, रक्षा विभाग) शामिल थीं, जो शिखर पर चढ़ने वाली पहली महिला हैं, सुश्री प्रियंका नायर (मलयालम/ तमिल अभिनेत्री) और श्री हेमंत जोसेफ (आई.टी. प्रोफेशनल) शामिल हुए। हमारे साथ सुश्री सुमैया (वन विभाग अधिकारी) और स्थानीय जनजातियों से संबंधित गाइड भी थे।

पहला दिन (10 जनवरी 2021) - बोनक्काड से अतिरुमला बेस कैंप (15 किमी): सुबह 6 बजे के आसपास घर से हमारा सफ़र कार से शुरू हुआ और लगभग 8 बजे हम बोनक्काड वन जांच कार्यालय पहुंचे। इस दौरान, हम एक बंद चाय बागान से गुज़रे। सुबह करीब नौ बजे हमने नाश्ता किया जो सभी घर से लाए थे और फिर आराम से चढ़ाई शुरू कर दी। हमारे पास 3



सफर की शुरुआत.... बोनक्काड से

दिनों के लिए कपड़े, स्लीपिंग बैग, सूखे मेवे, चॉकलेट और खुद का दोपहर का भोजन सहित बैकपैक थे। हमारे इस सभी सामान को गाइड लेकर जा रहे थे। हमने अर्ध-पर्णपाती जंगलों से गुज़रते हुए वाज़पंतियार और करमनयार के झरनों को पार किया। अंत में, हम 10 किलोमीटर के ट्रेक तक यानि अट्टयार पहुँच गए। थोड़ी मुश्किलात के साथ हमने अट्टयार को पार किया और कुछ समय के लिए अट्टयार शिविर में आराम किया। अब घने शोला जंगलों से घिरे घास के मैदानों की शुरुआत हुई। जब भी हम छायादार इलाके से गुज़रते, खून चूसने वाले जोंक हमें काट रहे थे और हम उन्हें रगड़ने के लिए नमक का इस्तेमाल करते थे। घास के मैदानों में, हम एक या दो लोगों के समूह में बंट गए क्योंकि हमारी रफ़्तार अलग अलग थी। घास के मैदान में जंगली हाथी के गोबर को देखा जा सकता था।

हम दूर से ही ऊंचे शानदार पहाड़ों के सदाबहार जंगल, बादल और चांदी जैसे चमकते पानी से सराबोर झरनों का दिलकश नज़ारा देख सकते थे। अब घास के मैदान खत्म हुए, और अपनी शारीरिक ताकत की असली

करमना नदी से पहले जंगल का दृश्य

परीक्षा की शुरुआत हुई अर्थात् अब हमें घने सदाबहार जंगलों के बीच से खड़ी चढ़ाई करनी थी। यहां ज़िक्र करना ज़रूरी है कि पर्वत को मलयालम में मुट्टिडिचानपारा कहा जाता है यानि कि जब आप चढ़ेंगे तो आपका घुटना आपकी छाती को छूएगा, ये बात यहां सच साबित हो रही थी। आखिरकार घने कोहरे और जंगल के अंधेरे को चीरते हुए चढ़ाई खत्म हुई, और लगभग 4.30 बजे हम दिन की अपनी मंज़िल, यानि अतिरुमला बेस कैंप, पहुँच गए। हाथियों और अन्य बड़े जंगली जानवरों के हमले को रोकने के लिए आधार शिविर के चारों ओर एहतियातन गहरी खाई बनाई गई है। हमारे गाइड साथियों ने चाय बनाई और फिर तरोताज़ा होने के लिए हेमंत और मैं खाई को पार करते हुए नहाने के लिए पास बहती जल धारा में चले गए। अहा..... ! कितना ठंडा पानी.... बेस कैंप में उन्होंने हमें सोने के लिए चटाई दी। वहाँ हमारे अलावा पुरुषों की एक और टीम थी।

गाइड खाना बनाने में व्यस्त हो गए और हम बातचीत में मशगूल हो गए हमने गाने गाए और एक दूसरे से अपने अनुभव साझा करते करते अंधेरे में पता ही नहीं चला कि कब आँख लग गई और हम सो गए। सोलर सिस्टम की बैटरियों के ज़रिए बिजली थोड़े समय के लिए ही मिलती है। हमने अपने गीले कपड़ों को फर्श और दीवारों पर फैलाया और उनके जल्द से जल्द सूखने की उम्मीद की। रात बहुत तूफानी, कंपकंपाने वाली बर्फीली, और तेज़



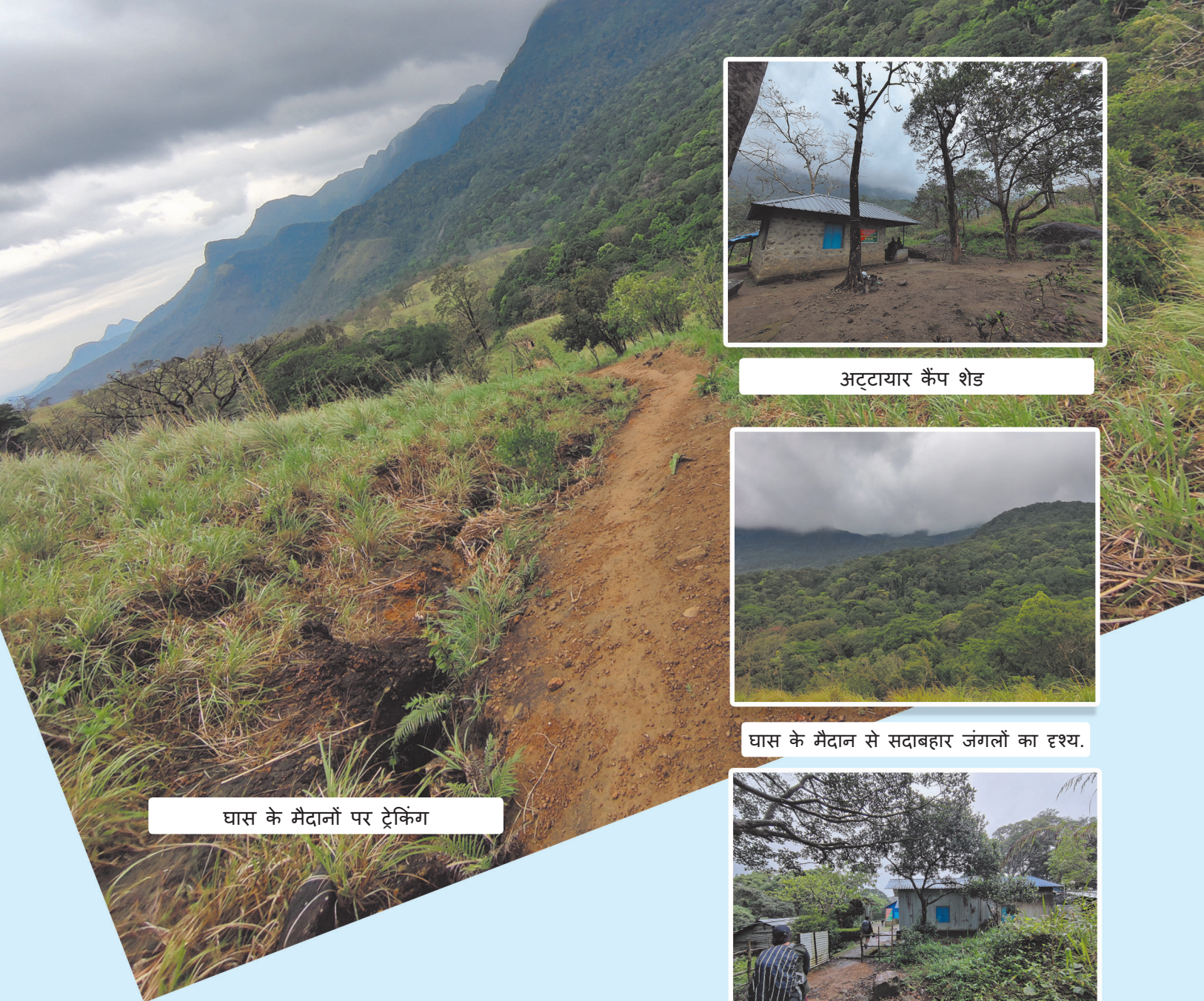
जलधारा के पास दोपहर के भोजन का आनंद



वाज़पंतियार नदी से गुज़रते हुए हम



अट्टायार नदी का विहंगम दृश्य



घास के मैदानों पर ट्रेकिंग



अट्टायार कैप शेड



घास के मैदान से सदाबहार जंगलों का दृश्य.



सुरक्षा खाई के पार..... अतिरुमला आधार शिविर

बरसात वाली थी। शेड की लोहे की छत की चादरों और लोहे के दरवाज़े ने रात भर शोर मचाया। बारिश का पानी दरवाज़े से ज़ोर-ज़ोर से टकरा रहा था। और दुबले पे दो आढ़ाष को चरितार्थ करते हुए मेरा 20 डिग्री सेल्सियस का स्लीपिंग बैग मुझे ठंड से बचाने के लिए काफी नहीं था।

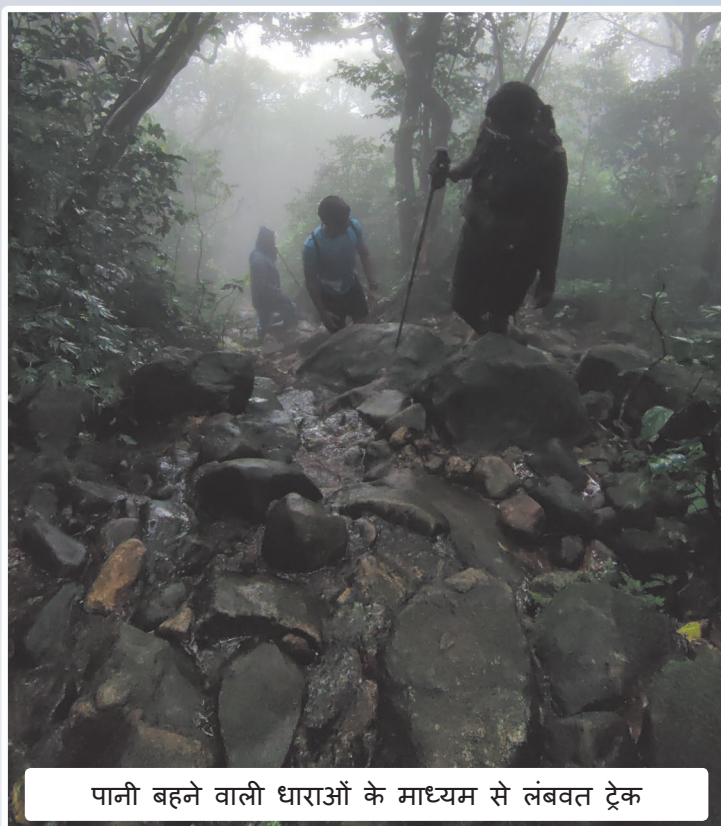
दूसरा दिन (11 जनवरी 2021) - अतिरुमला से अगस्त्यकूटम चोटी (6 किमी): हम सुबह 5 बजे उठ गए, लेकिन हमें यकीन नहीं था कि हम चढ़ पाएंगे क्योंकि तेज़ बारिश हो रही थी। जब बारिश थोड़ी कम हुई, तो हम नहाए, उपमा का नाश्ता किया और सुबह 8 बजे चढ़ना शुरू किया। हमने चॉकलेट से भरा एक छोटा बैग लिया और गाइड द्वारा बनाया गया थोड़ा सा लंच साथ रखा। इलाका बहुत दुर्गम और खतरनाक था और हमें जल धाराओं, फिसलन भरी चट्टानों और पेड़ों की जड़ों से होकर ऊपर जाना पड़ रहा था क्योंकि सड़क नहीं थी। इसी बीच तेज़ बारिश होने लगी और छोटी जल धाराएं बड़ा रूप धारण करने लगीं। हम खतरनाक बाँस के जंगलों से गुज़रे जहाँ हाथी और बाइसन अक्सर आते हैं। हवा बहुत तेज़ थी और कभी-कभी



सुरक्षा खाई को पार करते हुए अतिरुमला आधार शिविर पहुंचना

हमें लगता था कि हम उड़ जाएंगे। मेरा ज़हन हर मिनिट मुझे रुकने और वापस लौट जाने का हुक्म दे रहा था। इसके पहले हमारे कानों ने हवा के इस तरह के तेज़ झोंकों की सनसनीखेज़ आवाज़ कभी नहीं सुनी थी। जब हम चोटी पर चढ़ने से पहले एक चट्टानी इलाके पोंगालापारा पहुंचे, तो बारिश बंद हो चुकी थी। हमारे पास खड़ी चट्टानों पर चढ़ने के लिए रस्सियाँ थीं और फिर बीच में छोटे-छोटे जंगल दिखाई दे रहे थे। कई रस्सियों के सहारे चढ़ने के बाद, हम आखिरकार अपनी मंज़िल, शिखर पर पहुँचे। हमने वहाँ कुछ तस्वीरें लीं, अगस्त्य मंदिर में प्रार्थना की और अपनी उपलब्धि का आनंद लेते हुए लगभग एक घंटा वहाँ बिताया।

हम जल्द ही नीचे चढ़ने लगे क्योंकि हमें रात होने से पहले बेस कैम्प में वापस पहुंचना था। धन्या के खतरे को जाने बिना हम तीनों तेज़ी से नीचे उतरे। मौसम साफ था, और हम तीनों ने पोंगालापारा में ठंडी जल धारा में स्नान किया। हमने जल्द ही अपनी चढ़ाई शुरू की और इसी बीच बारिश फिर से शुरू हो गई। गाइड ने हमें बताया कि जैसे ही शाम होती है, हाथियों का झुंड बाहर आता है और हमें जंगली हाथियों की गंध आनी शुरू हो चुकी थी। हम बिना किसी शोर-शराबे के तेज़ी से नीचे उतरे और रात होने से पहले ही हम शिविर में पहुँच गए। तब हमें बताया गया कि धन्या के पैर में कुछ बड़ी समस्या थी, हालांकि, हेमंत की बदौलत वह कैम्प में सुरक्षित पहुँच गई।



पानी बहने वाली धाराओं के माध्यम से लंबवत ट्रेक

हम पूरी तरह से थक चुके थे लेकिन हमें असीम संतोष था कि जीवन की सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक का अंत हो गया है। हमने गरमा गरम चावल कंज्जी खाया। हालांकि, रात भयानक अंधेरी, ठंडी, हवा और गरज व बौछारों से भरी थी। बारिश भी लगातार हो रही थी। हमें यकीन नहीं था कि अगले दिन यात्रा कैसी होगी।

तीसरा दिन (12 जनवरी 2021) - अतिरुमला से बोनाक्काड (15 किमी): तेज़ बारिश हो रही थी और हमें बताया गया कि एक दिन पहले तक अतिरुमला तक किसी को जाने नहीं दिया जा रहा था। हमें समझ नहीं आ रहा था



बहते पानी के साथ ट्रेकिंग का जोखिम

कि उस तेज़ आंधी में कैसे नीचे उतरें। गाइड ने बताया कि वास्तविक हालात देखने के लिए हम अट्टायार तक ट्रेक कर सकते हैं। यदि अट्टायार को पार नहीं किया जा सकेगा, तो हम वापस आ सकते हैं और पेप्पारा वन क्षेत्र में ट्रेक कर सकते हैं। हम जल्द ही नीचे उतर गए। हम समझ गए कि हाथियों का एक झुंड हमारे आसपास था क्योंकि हम हाथी दांत से ताज़ी ठेली गई मिट्टी देख पा रहे थे। मेरा मन खौफ़ से भरा हुआ था और मैं जितना हो सका तेज़ी से चलता रहा। इस पूरे दौरान, मेरे पैरों और हाथ में पकड़ी छड़ी के सहारे से जोंक मुझ पर चढ़ते रहे और उनके काटने की वजह से मेरे हाथ पैरों से खून बहने का सिलसिला जारी था। घास का मैदान होने के बावजूद रास्ता इतना फिसलन भरा था कि ज़रा सी ग़लती और सीधे घाटी की



मंज़िल पर पहुंचने की खुशी.... अगस्त्यकूटम के शिखर पर

तलहटी में !!! मेरा बैग पूरी तरह गीला था और पानी सोखने के कारण उसका वज़न 5 गुना बढ़ गया था । आखिर में, हम अट्टायार कैंप पहुंचे और कुछ चॉकलेट खाईं । अट्टायार पहुंचने के बाद हमें एक बिल्कुल अलग तरह की नदी मिली । शांत अट्टायार धारा अब हिंसक रौद्र रूप धारण करके नदी बन गई थी, बड़ी मुश्किल से और गाइडों के सहारे से हम एक दूसरे का हाथ थामकर ज़ंजीर की तरह नदी पार की । एक फिसलन का मतलब था मौत । अट्टायार पार करने के बाद हमने अपना दोपहर का भोजन (उपमा) वहीं खाया । जिस करमना नदी में घुटने तक पानी था, अब उसने ख़तरनाक रूप धर लिया था, पानी सीने तक चढ़ रहा था। आदिवासियों ने हमें नदी पार करने में मदद की । अब तक हम बोनाक्काड के पास पहुँच चुके थे, बारिश रुक गई और माहौल शांत हो गया था । हमारे शरीर में दर्द हो रहा था और जब तक हम वन कार्यालय पहुंचे तब तक पूरी तरह थक चुके थे । हमने गाइडों को उदारता से कुछ पैसे दिए और उन्हें अलविदा कहा ।

हमने तिरुवनंतपुरम की ओर वापसी शुरू की, इस दौरान मास्क लगाए लोगों से सामना हुआ, हम तो पूरी तरह से भूल गए थे कि कोरोना अभी भी



अगस्त्यकूटम के शिखर पर
अगस्त्य ऋषि का मंदिर



तेज़ हवा... घने कोहरेदलदली ज़मीन.. के बीच बढ़ते कदम



रौद्र रूप से बहती अट्टयार नदी से गुज़रते हुए



अगस्त्यकूटम के शिखर पर

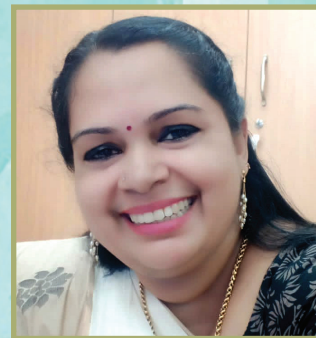
इंसान की ज़िदगी में उथल-पुथल मचा रखा है। गीले कपड़े कार के हीटर में सूख गए। चाय बागान के पास, हम एक छोटी सी चाय की दुकान में रुके और चाय और गर्म मसालेदार ऑमलेट का आनंद लिया जिसका मज़ा जन्नत जैसा था। चाय की दुकान एक महिला की थी, जिसके पति को बांस के जंगलों में बाइसन ने मार डाला था, जिसका मैंने पहले ज़िक्र किया था। हम अपने घरों में पहुंचे, फ्रेश हुए और तय किया कि हम अपने इस हैरतअंगेज़ सफर की कामयाबी का जश्न शाम को हाइसिंथ होटल में डिनर के साथ मनाएंगे। हमने हर दिन मौत को अपने सामने देखा, हमारी दोस्ती गहरी हुई, हमने अपनी शारीरिक और मानसिक सहनशक्ति को चरम सीमा तक परखा, लेकिन इस सबसे दिलो-दिमाग को जो सुकून मिला वो पूरी ज़िन्दगी के लिए बेशकीमती था। मोबाइल फोन, कोरोना और सोशल मीडिया से तीन दिन दूरी, ने हमें बच्चों की तरह तरोताज़ा कर दिया। हालाँकि, दर्जनों जोंकों के काटने के ज़ख्मों भरने में और हमें पूरी तरह से ठीक होने में कुछ महीने लग गए।



सुकून के पल..... ट्रैकिंग के बाद चाय और आमलेट का मज़ा लेते हुए

जंगली हाथियों के घरोंदे... बांस के जंगलों का मनोहारी दृश्य

आत्म अनुशासन



रश्मी शशिकुमार
पर्यवेक्षक

प्राध्यापक ने अपनी आत्म-विकास कक्षा के कालखंड के सत्र की शुरुआत में कहा: 'प्रिय छात्रों, हमने कल जो सीखा, वह अनुशासन के बारे में था। आज हम आत्म-अनुशासन के बारे में जानने जा रहे हैं।'।

तुरंत एक छात्र खड़ा हुआ और पूछा, 'महोदय, क्या अनुशासन और आत्म-अनुशासन दोनों एक ही हैं? प्राध्यापक ने जवाब दिया- 'नहीं!' तो फिर दोनों में क्या फर्क है?' छात्र ने उत्सुकतावश पूछा। 'मैं आपको समझाता हूँ।' प्राध्यापक ने अपनी बात शुरू की।

प्राध्यापक ने कहा: 'इससे पहले, क्या मैं आपसे एक प्रश्न पूछ सकता हूँ?'

'पूछिए, महोदय' छात्रों ने एक सुर में कहा। प्राध्यापक ने पूछा- 'घर और जेल में क्या अंतर है?'

थोड़े विचार-विमर्श के बाद, छात्रों ने उन विचारों को प्रकट करना शुरू किया, जो उन्हें सही लगे। घर में आज़ादी होगी, लेकिन जेल में नहीं। हमारे पास घर पर वह सब होगा जिसकी हमें ज़रूरत है और हम जेल में अकेले होंगे। बहुत सारे जवाब सामने आने लगे। 'इसमें से कोई भी जवाब सही नहीं है।' प्राध्यापक ने कहा। 'मैं

थोड़े बेहतर जवाब की उम्मीद कर रहा हूँ।'।

छात्रों ने फिर से सोचा और कई उत्तर लेकर आए। लेकिन प्राध्यापक इनमें से किसी भी जवाब से संतुष्ट नहीं थे।

अंत में एक छात्रा खड़ी हुई और बोली: 'महोदय, मैं इसका उत्तर दे सकती हूँ।' प्राध्यापक के अनुमति देने पर उसने कहा। "घर में हम खुद अंदर जाकर दरवाज़ा बंद कर सकते हैं लेकिन अगर कोई और दरवाज़ा बंद कर देता है, तो यह एक जेल है।"

"शानदार", प्राध्यापक और अन्य छात्रों ने उसकी सराहना की। शोर कम होने पर प्राध्यापक ने कहा। 'यही अनुशासन और आत्म-अनुशासन के बीच का अंतर है।'

उदाहरण के लिए, यदि हम धूम्रपान नहीं करते हैं क्योंकि यह कानूनी रूप से निषिद्ध है, तो यह अनुशासन है। वहीं अगर हम धूम्रपान के हानिकारक प्रभावों को समझें और बिना किसी रोक-टोक या नियंत्रण के इससे दूर रहें तो यह आत्म-अनुशासन है। अनुशासन नियंत्रण का एक रूप है। लेकिन आत्म-अनुशासन ही परम स्वतंत्रता है।'

उन्होंने आगे कहा: 'जीवन में अनुशासित होने के बजाय आत्म-अनुशासित बनें।' क्योंकि जिस अच्छाई को हम पहचानते हैं, वह उस अच्छे से बेहतर है जो दूसरे हम पर थोपते हैं।' यह हम सभी के लिए बहुत अच्छी सीख है।

वास्तविक आत्म-अनुशासन जीवन में गलतियों को पहचानने और सही पर ज़ोर देने और ग़लत से दूर रहने के बारे में है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्व की उच्चतम अवस्था भी है। दूसरे शब्दों में, आत्म-अनुशासन वह द्वार है जो स्वयं को बुराई से बंद कर देता है। उस दरवाज़े के बोल्ट और हुक दूसरे के हाथ में न छोड़ें। प्राध्यापक की इस बात का छात्रों के ज़हन पर गहरा प्रभाव पड़ा और इस कक्षा के बाद वे अपने साथ आत्म अनुशासन की बेहतरीन सीख लेकर गए।

ओणम



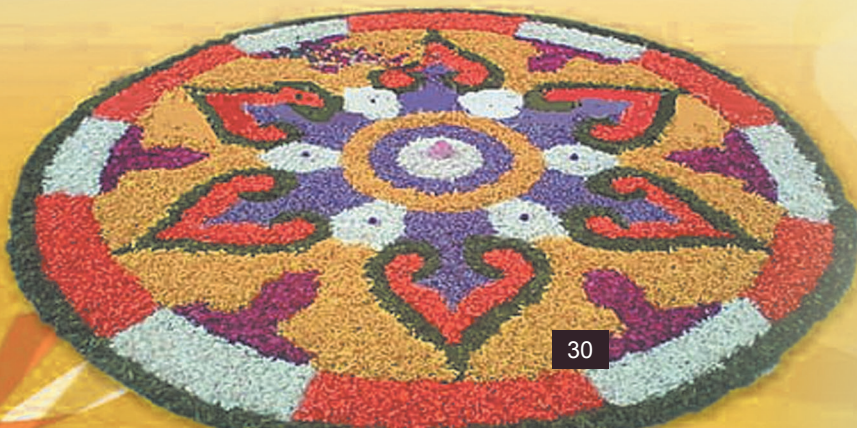
सिद्धार्थ के अजीत
बहुकार्य कर्मी

ओणम श्रावण महीने में मनाया जाने वाला त्यौहार है भले ही यह हिंदू धर्म से जुड़ा त्यौहार है लेकिन यह आमतौर पर केरल वासियों के देशीयोत्सव के रूप में जाना जाता है। यह धर्म, जाति या लिंग के भेदभाव के बिना हर केरल वासी या मलयाली द्वारा मनाया जाता है। यह भूमि के परोपकारी राजा महाबली या मावेली का स्वागत करने के लिए मनाया जाता है, जिन्हें श्री महाविष्णु द्वारा वर्ष में एक बार पाताल लोक से अपनी प्रजा से मिलने की अनुमति दी गई थी, उनके शासनकाल में झूठ, ईर्ष्या या विश्वासघात जैसा कुछ नहीं था और लोग शांति और समृद्धि से रहते थे।

इस साल का ओणम 20 से 23 अगस्त तक था, जबकि तिरुवोणम 21 को। लेकिन उत्सव के कुछ दिन पहले मलयालम नक्षत्र अक्षम पर 13 अगस्त को 'अत्तपूक्कलम' (फूलों की रंगोली) के साथ शुरू हुआ है। 'अत्तपूक्कलम' अक्षम नक्षत्र से शुरू होकर दसवाँ दिन तिरुवोणम नक्षत्र तक प्रत्येक दिन तैयार किया जाता है। महाबली का स्वागत करने के लिए, हम अपने साथ-साथ अपने परिजनों के लिए तोहफे में देने के लिए 'ओणकोडी' के नाम से जाने जाने वाले नए कपड़े खरीदते हैं और 'ओणसद्या' (दावत) बनाते हैं। ओणम से संबंधित कई खेल और मनोरंजक प्रतियोगिताएं परिवार के सदस्यों, दोस्तों के बीच खेले जाते हैं। मलयालम में एक कहावत है 'काणम विट्टुम

ओणम उण्णणम', जिसका अर्थ है कि ज़रूरत पड़ने पर अपनी संपत्ति बेच कर भी ओणम मनाना चाहिए। महाबली को यह दिखाने के लिए है कि हम उनके शासन काल के समान ही सुखी और शांति से रह रहे हैं, ताकि जब महाबली वापस जाएं तो वे संतुष्टि से भरे हों और अगले साल फिर आए।

किसी भी अन्य त्यौहार की तरह ओणम भी कोविड 19 महामारी की चपेट में था। पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र, सप्ताह भर चलने वाला ओणम उत्सव, को भी रद्द कर दिया गया। सभी ने ओणम उत्सव को अपने घरों तक सीमित कर लिया। लेकिन इसने उन्हें एक-दूसरे से जुड़ने, मतभेदों को सुलझाने और तनावपूर्ण संबंधों को सुधारने का मौका दिया। भले ही इस बार का ओणम सामान्य ओणम नहीं था, लेकिन यह हाल के वर्षों के यादगार ओणम में से एक था।



आप बीती



सुश्री अनिता दास
कनिष्ठ अनुवादक

वर्ष 2012, अन्विता उच्च माध्यमिक की परीक्षा दे चुकी थी और उसके छुट्टियों के दिन चल रहे थे। मई का महीना था। उसकी तबीयत कुछ ठीक नहीं थी। अचानक उसे चिल्लाने की आवाज़ सुनाई दी। वह कुछ घबराई-सी दूसरे कमरे की तरफ दौड़ी, जहां से आवाज़ आ रही थी। वह ज़रा भी देर ना करते हुए उस कमरे में चली गई। देखा कि वहां उसके माता-पिता झगड़ा कर रहे थे। उसे कुछ समझ नहीं आ रहा था कि क्यों ये लोग झगड़ा कर रहे हैं। उसकी छोटी बहन अवंतिका ने बताया कि पैसों को लेकर उनके बीच झगड़ा हो रहा है। पिताजी गुस्सा करते हुए बाहर चले गए। कुछ देर बाद पिताजी वापस आए और मां को डाक्टर के पास लेकर जाने के लिए उनको तैयार होने के लिए बोले। मां झगड़े की वजह से नहीं जाना चाहती थी और कहीं ना कहीं पैसों की कमी की वजह से भी। खैर ना-ना करते-करते वह जाने के लिए तैयार हुई। वे लोग चले गए।

शाम हो गई और उसके पिताजी और मां नहीं लौटे। अचानक पिताजी कुछ घबराए-से घर आए। लेकिन मां उनके साथ नहीं थी। अन्विता को लगा कि वह बाहर किसी से बात कर रही होंगी, लेकिन कुछ ही देर में पिताजी ने पूछा कि क्या घर में कुछ पैसे हैं? अन्विता बोली कि शायद मां को पता होगा, तब उन्होंने बताया कि मां की तबीयत खराब हो गई है, उन्हें अस्पताल लेकर जा रहे हैं। वह डर गई कि उनकी इतनी तबियत खराब हो गई कि उन्हें अस्पताल लेकर जाना पड़ रहा है। कुछ देर बाद पिताजी बोले कि मां के साथ तुम को भी जाना पड़ेगा। अन्विता बोली- मैं कैसे जा सकती हूं, मेरी तबियत भी तो ठीक नहीं है, तो मैं कैसे जा सकती हूं, तो

पिताजी गुस्सा करते हुए बोले- तुम्हारी हमेशा तबियत खराब ही रहती है, तुम मरो यहीं। कुछ देर बाद पिताजी छोटी बहन अवंतिका को लेकर चले गए। मां की कहीं से कोई खबर नहीं आ रही थी और अकेले-अकेले अन्विता को डर भी लग रहा था।

समय बीत रहा था, लेकिन कहीं से कुछ खबर नहीं आ रही थी। अन्विता लेटी-लेटी सोच रही थी कि मेरी मां कैसी होगी, उतने में पिताजी आए और घर में पैसा ढूढ़ने लगे, लेकिन उन्हें कुछ नहीं मिला। वह पूछी कि मां कैसी है तो उन्होंने बताया कि अब उसकी मां बचने वाली नहीं है। यह सुनकर वह बहुत रोने लगी। आस-पड़ोस वाले ढांडस बंधाने घर आए। सब उसे चुप कराने में लग गए। लेकिन वह चुप नहीं हुई। ऐसे में पूरी रात कट गई। सुबह-सुबह पिताजी आए, तो उन्होंने बताया कि मां को लकवा मार गया है और डाक्टर बोल रहे हैं कि कुछ कहा नहीं जा सकता है और बहुत पैसा भी मांग रहे हैं। उसी दिन अन्विता अपने पिताजी के साथ अस्पताल गई। वहां जाकर देखी कि उसकी मां दर्द से कराह रही थी। उनकी पीड़ा देखी नहीं जा रही थी।

मां को अस्पताल में भर्ती हुए एक सप्ताह हो गया। लेकिन उनकी स्थिति में कुछ खास सुधार नहीं हुआ। उसके बाद उनको घर लाया गया। पैसों की कमी के कारण एक चलती-फिरती महिला अपाहिज हो गई। इसलिए इंसान को हमेशा अपने पारिवारिक खर्चों में से कुछ पैसा विपत्ति के समय उपयोग के लिए बचाकर रखना चाहिए, ताकि कभी भी इस तरह का नुकसान सहना न पड़े। साथ ही अपनों की जान बचायी जा सके।

भगवान का इंसाफ



अंजुम ज़हरा,
पत्नी श्री सादत हुसैन रिज़वी,
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मुबारक हो..मुबारक हो... छोटू भाई, भीम भाई को मुबारक हो!आज सुबह से ही भीम छोटू के घर बधाईयों का तांता लगा हुआ था, आखिर हो भी क्यों न! दोनों भाईयों ने अपनी पढ़ाई अधूरी छोड़कर अपने पिता के परंपरागत सैलून में काम करना जो शुरू कर दिया था ताकि अपने बड़े भाई 'कमल' की उच्च शिक्षा में पूरा सहयोग कर सकें। और इसी त्याग का नतीजा था कि आज उनका बड़ा भाई न्यायाधीश की परीक्षा में चयनित हो गया था।

उनके घर में जैसे भगवान ने रहमतों की बारिश कर दी थी बेहद खुशनुमा माहौल था घर का... हालांकि छोटू भीम को अपने भाई की कमाई से कोई मतलब नहीं था क्योंकि दोनों भाई अपने हाथों की कला यानि सैलून की कमाई से काफी ज़मीन और खेतीबाड़ी खरीद चुके थे लेकिन 'जज' का भाई कहलाना उनका सीना गर्व से चौड़ा कर देता था और इसी बीच भैया को नियुक्ति मिल गई और शुरुआती तनख्वाह यही कोई ₹1500 रोज़...और बंगला, गाड़ी नौकर-चाकर ये सब अलग से। भैया की शानो-शौकत और ज़िन्दगी बिल्कुल राजाओं की तरह हो गई।

फिर वक्त बीतते घर में बात शुरू हुई की भैया की शादी कर देनी चाहिए आखिर भाई अब सैटल हो चुका है, अच्छे-अच्छे रिश्ते भी आना शुरू हो गए थे और चार भाईयों में (सबसे छोटा रमेश भी था जो वकालत की पढ़ाई कर रहा था) जब तक पहले की नहीं होगी बाकियों का नंबर कैसे आएगा? लड़का न्यायाधीश है इसी वजह से एक से बढ़कर एक बेहतरीन रिश्तों की लाइन लग गई। जो इनके परिवार की हैसियत से परे थे।

लेकिन ढेरों बेहतरीन रिश्तों के बावजूद परिवार ने फ़ैसला किया कि हम अपने जिले के आसपास की ही साधारण परिवार की उच्च शिक्षित बहू लाएंगे। इसी तलाश के बीच जब कभी भी कमल के पापा कहीं किसी समाज के कार्यक्रम में जाते थे तो अपनी बेटी से रिश्ता करवाने की लालच में लोग उनकी ख़ूब आवभगत करते यहां तक कि एक श्रीमान तो जब अंकल पानी के लिए उठे तो गिलास लेकर ही खड़े थे... अंकल की खुशियों का ठिकाना नहीं... पानी के गिलास के आदान-प्रदान के साथ ही बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ और लड़की जिसका नाम किरण था, के पिता

ने धीरे से मौका पाकर अपनी पुत्री का परिचय भी चाचा से करवा दिया, लड़की एम.एस.सी पास बी.एड की हुई है यानि उच्च शिक्षित है.. इसी बीच जज साहब भी फेसबुक पर अपने जज होने की खुशियां और नए दोस्तों की रिक्वेस्ट ताबड़तोड़ स्वीकारने लगे.. इसी दरमियान किरण से भी उनकी दोस्ती हो गई और बातचीत का सिलसिला शुरू हुआ उधर चाचा लड़कियों की लंबी फेहरिस्त को खंगाल ही रहे थे और इधर किरण जज साहब को शीशे में उतार रही थी...।

आखिर बातों का सिलसिला ऐसा चला कि कमल पूरी तरह किरण का दीवाना हो गया और अपने घर पर साफ-साफ बोल दिया कि मैं किरण से ही शादी करूंगा आप लोग अब लड़की मत देखो। घर वालों ने ये सोचकर कि 'भाई को लड़की पसंद है शहर के करीब की है और उच्च शिक्षित है, हामी भर दी। और चाचा तो 'पानी का गिलास दिए जाने से इतने प्रभावित थे कि समझी मान ही लिए थे।

आखिर भीम छोटू ने धूमधाम से भाई की शादी की, शहर के रईसों को बुलाया गया कई किस्म की मिठाई तो

एक से बढ़कर एक पकवान बनवाए... लोग तो उंगलियां चाटते रह गए। और सबकी ज़बान पर एक ही बात थी कि क्या तरक्की कर ली है इनके परिवार ने... हालांकि इसमें बुरी नज़र लगने का अंदेशा भी छुपा हुआ था लेकिन शादी की चकाचौंध में ये सब किसी ने नहीं सोचा। जज साहब ने स्विफ्ट डिज़ायर भी ख़रीद ली।

वक्त बीतता गया... जज साहब दिन भर कोर्ट में पत्नी दिन भर मोबाईल पर अपने घर वालों से बात करती रहती..। यही से शुरुआत हुई एक साजिश की... किरण घमंड में चूर होती चली गई... धीरे-धीरे कमल को अपने घर वालों से दिली रूप से दूर करने लगी यहां तक की उसके छोटे भाई कभी उसके पास रहने आते तो उनसे नौकरी की तरह व्यवहार करती.. भाईयों का दिल टूट सा जाता। आखिर कुछ दिन सहते और लौट जाते। किरण भी जब घर जाती तो सास ससुर से देवरों से रूखा व्यवहार करती। वे खाना खाने बैठते तो प्लेट सरका के खाना देती और कमल को इस सबसे अंजान रखती।

ये सिलसिला चलता रहा यहां तक कि अपनी सेवा पुस्तिका में कमल ने पहले अपनी माँ, रमेश और किरण को नॉमिनी बनाया था लेकिन बाद में सिर्फ किरण का ही नाम रहने दिया बिना परिजनों को बताए। कहते हैं 'अति सर्वत्र वर्जयेत'... वक्त बीतता रहा और सारी दुनिया कोरोना महामारी की चपेट में आ गई... अब जब भी कमल कोर्ट से लौटता किरण उससे कहती- 'बाहर ही नहा के घर में आओ, अपने कपड़े धोकर डालो; इससे कमल के दिल में कोविड को लेकर एक ख़ौफ़ पैदा हो गया। सिलसिला जारी रहा और किसी

बुरे समय में कमल कोविड पाज़िटिव हो गया पहले से जिसके दिल में कोविड को लेकर इतना डर रहा हो उसे सच में हो जाए तो.....!!!!

ईलाज शुरू हुआ....भीम भी फौरन पहुंच गया और भाई की सेवा में लग गया, लेकिन किरण ने कमल को हाथ लगाने से ही इंकार कर दी न अस्पताल में साथ रही न पति को कोई मानसिक सहारा दिया यहां तक कि उसका भाई तो उसे यही कहता था कि दीदी तू मत जाना जीजाजी के पास... बेचारा भीम निशब्द हो गया ॥ और भाई को दिलासा देता रहा... आखिर कमल की सांसों की डोर टूट गई उसका देहावसान हो गया। घर वालों पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा। प्रशासन ने शरीर गृह ज़िले ले जाने से मना कर दिया, आखिर घर के सदस्य ही 300 किमी दूर पहुंचे और जैसे तैसे प्रोटोकॉल के तहत अंतिम संस्कार किया।

और फिर बंगला खाली करना, अनुकंपा नियुक्ति की बात शुरू हुई ज़िला जज ने कमल की पत्नी व भाईयों को समझाया कि क्लर्क की नौकरी जज की पत्नी को करना ठीक नहीं रहेगा इसलिए तुम भाईयों में से कोई कर लो लेकिन तब ही किरण बोल पड़ी..नहीं मैं करूंगी नौकरी। किसी को नहीं दूंगी। डी जे साहब हतप्रभ रह गए समझाया.... लेकिन किरण अड़ी रही.. आखिर भाईयों को मानना पड़ा।

इधर घर आकर किरण ने खूब हंगामा किया कमल ने घर के लिए जो कुछ भी किया था सब वापस मांगने लगी उसे लगता था कि घर के पर्दे भी कमल ने ही लगवाया था, यहां तक कि उसकी कार भी अपने मायके ले गई

पुलिस थाने तक पहुंच गई, कि मुझे मेरे पति का सारा सामान वापस दिलवाया जाए, इन सबसे भी दिल नहीं भरा तो अपने पूरे समाज में कमल के खानदान की दिल भर के बुराई की... और आखिर में सब कुछ छोड़कर अपने घर वापस चली गई।

कुछ दिन बाद भीम से किसी ने पूछा.... ये सब क्या हो गया उसने हैरतअंगेज़ जवाब दिया.... "हमारे भाई को छीनकर भगवान ने हमारे साथ इंसाफ़ ही किया क्योंकि वो जीते जी तो हमारे किसी काम का था ही नहीं और उसकी मौत घमंडी चेहरों के मुँह पर कुदरत का तमाचा है.....!!!!"

जो छोटे भाई, अपने भाई के लिए पलकें बिछाते थे उसके मुंह से ऐसे शब्द सुनना वाकई दिल को झकझोर देने वाला था।



आशीष कुमार
व. लेखापरीक्षक

सआदत हसन मंटो

क्या आपने किसी ऐसे साहित्यकार का नाम सुना है जिसकी रचनाएं पढ़कर आपके माथे के बाजू से पसीने की लकीरें बह निकलें, जो आपके दिलो-दिमाग को झंझोड़ दे, हिलाकर रख दे आपको.....!! जी हाँ ऐसे ही एक साहित्यकार का नाम है सआदत हसन मंटो।

भारत-पाकिस्तान बंटवारे की स्थिति की आँखों देखी हालत को जिस अंदाज़ से मंटो ने अपनी कलम से दर्शाया है वो क़ाबिले ग़ौर है आज भी उनका कोई सानी नहीं है। सिर्फ़ 42 बरस की अल्प आयु में वो इस दुनिया ए फ़ानी से कूच कर गए। इनकी लेखनी सरहदों के परे व समाज की कुरीतियों के खिलाफ़ सभ्यता के ग़ालों पर एक तमाचा है।

उनकी रचनाओं में औरत-मर्द के रिश्ते, भारत-पाकिस्तान का बंटवारा, सामाजिक तनाव जैसे मसलों पर बेबाकी से लिखा गया है। जिनकी प्रासंगिकता आज भी है। अपने 19 बरस के लेखन काल में उन्होंने 230 के करीब कहानियाँ व 70 लेख लिखे, अपने लेखन में उन्होंने समाज की घटनाओं का इतना सजीव चित्रण किया कि 6 बार तो उन पर अक्षीलता का मुक़दमा दायर किया गया। आइये एक नज़र डालते हैं मंटो की कुछ चुनिंदा रचनाओं के कथनों पर, लेकिन ध्यान रहे मंटो

की रचनाओं का पूरा बखान करना इस पत्रिका के उसूलों के खिलाफ़ है इसलिए हम इशारों में ही बात करके निकल जाएंगे। क्योंकि मंटो ने खुद ही अपनी लेखनी को लेकर कहा था 'अगर आप इन अफ़सानों को बर्दाश्त नहीं कर सकते तो ये ज़माना नाक़ाबिले बर्दाश्त है।' भूख को लेकर मंटो ने कहा था 'दुनिया में जितनी लानतें हैं भूख उनकी माँ है।'

टोबा टेक सिंह- इस कहानी में प्रवासन की पीड़ा को विषय बनाया गया है। देश विभाजन के बाद जहाँ हर चीज़ का आदान-प्रदान हो रहा था वहीं क़ैदियों और पागलों को भी स्थानान्तरित करने की योजना बनाई गई। फ़ज़लदीन पागल को सिर्फ़ इस बात से सरोकार है कि उसे उसकी जगह 'टोबा टेक सिंह' से जुदा न किया जाये। वो जगह चाहे हिन्दुस्तान में हो या पाकिस्तान में। जब उसे जबरन वहाँ से निकालने की कोशिश की जाती है तो वह एक ऐसी जगह जम कर खड़ा हो जाता है जो न हिन्दुस्तान का हिस्सा है और न पाकिस्तान का और उसी जगह पर एक ऊँची चीख के साथ आँधे मुँह गिर कर मर जाता है।

इसी तरह कुछ लघु कथाएं जैसे "घाटे का सौदा", "बे-ख़बरी का फ़ायदा", "हैवानियत", "जैली", "तक्रसीम",

“सॉरी”, “उलहना”, “पठानिस्तान”, और भी ऐसी रचनाएं हैं जिनको पढ़कर तत्कालीन समाज की सच्चाईयों से पर्दा उठता है। चंद शब्दों की इन लघु कथाओं को पढ़कर किसी के भी रोंगटे खड़े हो जाएं।

वास्तव में मंटो का साहित्य शोध का विषय है उस समय के हिन्दोस्तान-पाकिस्तान को जिस खूबसूरती से मंटो ने अपनी कलम की धार से कागज़ पर उतारा है वो कोई और समकालीन लेखक नहीं कर सका, किस तरह से दोनों देशों के आम लोगों को ज़िन्दगी के बदतर दिनों को, मौत को, अपने अपनों को जुदा होते देखना पड़ा, इस सबका मंटो ने आंखों देखा हाल बयान किया है।

‘मैं बगावत चाहता हूँ। हर उस फ़र्द के खिलाफ़ बगावत चाहता हूँ जो हमसे मेहनत कराता है मगर उसके दाम अदा नहीं करता।’ मंटो का ये कथन आज भी उतना ही प्रासंगिक है क्योंकि आज भी हमारे देश में न्यूनतम मज़दूरी पाना मज़दूरों के लिए किसी संघर्ष से कम नहीं है। अपने एक लेख में मंटो कहते हैं देश को लीडरों से बचाओ, हिंदी और उर्दू के रिश्तों को लेकर भी उन्होंने खुल कर अपने विचार रखे हैं। तो आप भी एक बार मंटो को पढ़कर देखिए और उनकी कहानियों में खो जाइए।



पेंटिंग - लक्ष्मी नायर
सुपुत्री सजीन्द्र कुमार
सहायक पर्यवेक्षक

मेरे दादा-दादी



जेनिफर जॉन
सुपुत्री उषा बर्ती
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

आजकल की भाग-दौड़ भरी जीवन में रिश्तों की अमूल्यता को अक्सर लोग भूल जाते हैं। वो दिन गए जब दादा-दादी, मामा-मामी सब लोग मिलकर एक छत के नीचे रहते थे। अब वो संयुक्त परिवार नहीं रहे। आजकल हम केवल एकल परिवार ही देख सकते हैं जहां हम अपनों के साथ भी बहुत कम वक्त बिताते हैं।

मुझे अपने दादा-दादी के साथ रहने का जो अवसर मिला उसे मैं बहुत अमूल्य मानती हूँ। मेरे बचपन में उन्होंने मुझे ढेर सारा लाड-प्यार और आशिर्वाद देकर मेरी देख-भाल की थी। अब भी वो यादें मेरे मन में ताज़ा हैं।

सुबह जब भी मेरे पापा-मम्मी मुझे जगाने की कोशिश करते थे तो मैं अपने दादा-दादी के पास दौड़ जाती थी और उनकी चादर के अंदर घुस जाती थी। उनके सीने की नरमी और गरमी में, मैं घंटों सोना पसंद करती थी। मेरे पापा-मम्मी के साथ कोई मन-मुटाव हो या कोई झगडा हो वो हमेशा मेरी तरफदारी करते थे। और जब भी मेरे पापा-मम्मी मुझे डांटते तो उल्टा उनको डांट देते थे 'क्यों परेशान करते रहते हो उसे, अब भी छोटी बच्ची तो है, क्यों उसके पीछे पड़े हो'। मुझे बचाने के लिए दोनों सामने आ जाते।

त्योहार हो, जनम दिन हो, मेरे लिए तोहफे खरीदकर लाते ... नए कपड़े, गहने, खिलौने, मिठाईयां न जाने क्या-क्या। बिलकुल एक राजकुमारी की तरह रखते थे मुझे।

बचपन में मुझे मीठा बहुत पसंद था। स्कूल से घर ले जाने के लिए जब दादा जी आते, उनकी जेब में मेरे लिए जरूर टोफियां होती थी। और दादी घर पर मेरा बेसब्री से इंतजार कर रही होती। देखते ही मुझे गले लगा देती थी और चूम-चूम कर अंदर ले जाती। अच्छे - अच्छे पकवान भी मेरी राह देख

रहे होते। कभी-कभी मुझे पॉकेट मनी भी दे देते थे।

और सब से मजेदार चीज यह थी कि मेरे दादा और दादी मुझे खूब सारी कहानियां भी सुनाते थे। राजा-रानी की कहानियां ही नहीं उनके अपने जीवन के किस्से और मेरे पापा-मम्मी के बचपन की कहानियां, उनकी शरारतें, कारनामे सब मुझे सुनाते थे। उनके जीवन की अनमोल घडियां, छोटी-छोटी सीख सब मेरे मन में अपनी छाप छोड़ गयी है।

अब मैं बडी हो गयी हूँ..... लेकिन उनके लिए मैं अब भी वो छोटी बच्ची ही हूँ जो उनकी गोद में बैठकर कहानियां सुना करती थी। समय बीत गया। जब उनको पहला मोबाईल फोन मिला तो मुझे उनको सिखाना पड़ा कि उसका उपयोग कैसे करना हैफोटो कैसे खींचना हैं, संदेश कैसे भेजना हैं, कैसे टाइप करना है उनके हर सवाल में नया कुछ सीखने की चाह थी वही उत्सुक्ता थी जो बचपन में मेरी आंखों में रहती थी। और मैं मास्टरनी बनकर छोटी बच्चों की तरह उनको सब आराम से बता देती थी ठीक वैसे ही जैसे वो लोग छोटी-छोटी चीजें मुझे समझाते थे।

दादा-दादी हर बच्चे के लिए एक अनमोल वरदान हैं। वो बच्चे बहुत खुशनसीब होते हैं जो अपने दादा-दादी के साथ पले-बढ़े होते हैं। सिर्फ लाड-प्यार ही नहीं जीवन की कीमती सीख भी उनकी घनिष्टता से हमें प्राप्त होती है। हमारी छोटी-छोटी गलतियों को वो प्यार से सुधार लेते हैं।

अब हम अलग घर में रहते हैं। लेकिन जब भी मैं उनसे मिलने जाती हूँ, वो मुझे गले लगाकर मेरे माथे को चूमकर मेरा स्वागत करते हैं जैसे बरसों पहले स्कूल से लौट कर आते समय करते थे और मैं उनके सामने फिर से वो बच्ची बन जाती हूँ और उनके आंचल से लिपट जाती हूँ।

नदियाँ



ए एन देविका
सुपुत्री जी सी नारायणन पोद्दी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

मुझे रास्ते में
नदियाँ मिलती थीं
हँसती खिलखिलाती
कभी-कभी समुद्र भी मिल जाते थे
इन नदियों की ज़्यादती से परेशान
इनकी ढिठाई से वे रहते थे हैरान
उनकी व्यथा-कथा भी कुछ और थी
सदियों से वे सह रहे थे नदियों की
प्रताड़ना
झेल रहे थे अपार वेदना
पर कभी कुछ नहीं थे कहते
रहते थे हमेशा सहते
जब नदियों ने सारे जहाँ का
कूड़ा-करकट
धरती का सारा मैल
बहाकर
समुद्र के सीने पर पटकने लगी
तब भी समुद्र कुछ नहीं बोला
उसने सोचा कि
शायद ये नदियाँ
अपनी इस ओछी हरकत से
संभल जाएं
मेरी हालत देखकर

अपनी गतिविधियों से
बाज़ आ जाएं
वह देखता रहा
कुछ दिन और
सुधार के सपने बुनता रहा
कि मेरी प्रेयसी
सुधर जायेगी
और अपने इस
अतिक्रमण से बाज़ आयेगी
वह कुछ दिन देखता.....
पर जब उसने देखा कि
उसकी सहनशक्ति
जवाब दे रही है
और नदी अति कर रही है
तब उसने भी
नदियों द्वारा लाया सारा
कूड़ा-करकट
नदियों को
धरती को
पृथ्वीवासियों को
कारखानों के मालिकों को
सरकार को
वापस देने के लिये

वर्षों से अपने
खौलते खून को
वर्षों से अपने
उबलते खून को
धरती पर बहा दिया
नदियों को भी
मिट्टी में मिला दिया
सब को उनके मुँह की
खिला दिया
तोड़कर अपने
गाम्भीर्य को
अपना रौद्र रूप दिखा दिया
उसने यह रूप स्वेच्छा से
नहीं दिखाया बल्कि
उसे बाध्य किया गया
लोगों द्वारा
लोगों की करतूतों द्वारा
नदियों की गतिविधियों द्वारा
पर नदियाँ क्या करें वे तो स्वयं त्रस्त हैं
इसीलिये शायद
समुद्र उन्हें आज तक
क्षमा करता रहा
सारे भार को स्वयं सहन करता रहा ।

स्वतंत्रता – आत्मनिर्भरता



काव्या प्रसन्नन
सुपुत्री श्रीमती एस लक्ष्मी
व.लेखापरीक्षा अधिकारी

स्वतंत्रता आपको अपनी मर्जी से जीवन जीने का अधिकार प्रदान करती है। भारत में स्वतंत्रता शब्द का विशेष इतिहास रहा है, क्योंकि एक समय था, जब हम अपने देश में ही ब्रिटिश राज के गुलाम बन गए थे। भारत की आत्मनिर्भरता ही विदेशी लोगों को हमारी ओर घसीटकर ले आयी। हमारे पास फसल, धन, धान्य सब कुछ था, लेकिन उनकी चालाकी और बंदूक के नोक के सामने हम हार गए। हम अपने सोने को कम आंक कर उनके एल्युमिनियम बटन्स से आकर्षित हो गए। इस प्रकार हमारे देश में ब्रिटिश राज का शासन होने लगा। हमारा अधिकार, अवकाश, आशय, इच्छाएं सभी मिट्टी में मिल गए। एक दिन की रोटी के लिए भी उनके सामने हाथ फैलाने पर मजबूर हो गये थे भारतवासी।

अब हम बता रहे हैं कि 15 अगस्त 1947 के बाद भारत आजाद हुआ। हां, यह तो सच है कि हमारे देश में फिर से भारतवासियों का, उनकी इच्छा के अनुसार शासन होने लगा। लेकिन क्या वास्तव में यहां के लोग आजाद हैं? क्या एक पेड़ अपनी इच्छानुसार अंकुरित हो सकता है? उसे कब, कहाँ, कैसे और किस दिशा में बढ़ना है, यह तय करता है – पानी और सूर्य। परंतु विज्ञान बताता है कि पेड़ आत्मनिर्भर होता है। हां, यह तो एक हद तक सही है, लेकिन जहां-जहां उन्हें निर्भर करना पड़ा, वहां-वहां उनके तंत्र को भी छोड़ना पड़ा।

मानव-जीवन में भी ऐसी बहुत कुछ घटनाएं होती हैं, जिसे मैं अच्छी तरह बता सकती हूं। मां की गोद से बाहर निकलने के लिए हम अनेक लोगों का सहारा लेते हैं। फिर महीनों तक खाने-पीने के लिए मां पर, दो वर्ष की आयु में पैदल चलने, दौड़ने-कूदने, पढ़ना, लिखना, खेलना आदि के लिए भी हम किसी न किसी पर निर्भर रहते हैं। सांस लेने के सिवाय जो कुछ भी हम करते सब किसी न किसी से सीखकर ही करते हैं। मां, बाप, गुरु, दादा, दादी ऐसे अनेक पात्र हैं, जिन पर हम प्रत्येक कार्य के लिए निर्भर रहते हैं - यही निर्भरता है और उनकी आज्ञाओं का पालन करने लगते हैं। बड़ा होने के बाद एक 14x7 से.मी. कागज पर हम निर्भर हो जाते हैं। हमारे जीवन में इस कागज तंत्र का शासन होने लगता है। कैसे, कितनी ऊंचाई से, कहां से हमारा जीवन बीतता है, यह तय करते हैं ये कागज। इस प्रकार हम अपने जीवन में बहुत सारी चीजों के..... रिश्तों के गुलाम हैं।

जिस तरह जीवन में 100% आत्मनिर्भरता संभव नहीं है, उसी तरह 100% स्वतंत्रता भी, जिसके कारण हमें कभी न कभी जीवन में किसी न किसी पर निर्भर रहना पड़ता है। हमारे जीवन में आज्ञादी तब ही आ सकती है जब हम आत्मनिर्भर हों।



सादत हुसैन रिज़वी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक

मरने के बाद- स्वर्ग नरक से पहले

मनुष्य की ज़िन्दगी का एक अटल सत्य मृत्यु है। यानि हर इंसान को मौत का मज़ा चखना है !! मैं लम्बे वक्त से इस विषय पर शोध कर रहा हूँ कि जब भी कोई मरता है लोग उस व्यक्ति के लिए अपनी सोच के मुताबिक उसे स्वर्ग नर्क में गया हुआ घोषित कर देते हैं। लेकिन मुझे लगता है कि मरने के बाद और स्वर्ग नर्क के फैसले से पहले कुछ न कुछ ज़रूर होता होगा क्योंकि बिना कर्मों के हिसाब के कोई इंसान कैसे स्वर्ग नर्क में जा सकता है ? कैसे किसी को मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है ? शोध की गहराई में जाते ही मैं समझा कि इस अंतराल को विभिन्न धार्मिक मान्यताओं में कई नाम दिए गए हैं जैसे यातना, सज़ा से गुज़रना, बरज़ख या अंग्रेज़ी में कहें तो Purgatory.

यानि बहुत सारा साहित्य इस पर मौजूद है क्योंकि ये संभव ही नहीं है कि बिना अपने कर्मों का हिसाब चुकाए कोई व्यक्ति स्वर्ग पा सके। यह संकल्पना सभी धर्मों में विद्यमान है। शरीर और आत्मा के अलग होते ही इंसान की आत्मा एक गहरी नींद में चली जाती होगी एक ऐसी नींद जो बुरे कर्मों के मुताबिक बेहद डरावने या अच्छे कर्मों के कारण सुकून और इत्मिनान से भरी होगी। और वो उस नींद के दौरान ही अपने दुनियावी कर्मों का सिला पाता होगा।

सबसे ज्यादा यातनाओं के दौर से उसे ही गुज़रना पड़ेगा जो मरने से पहले दूसरों का हक ना अदा किया हो या किसी का कर्ज़ उस पर रहा हो। पूछा गया कि 'जब मरते हैं तो कैसी

तकलीफ़ होती है? जवाब मिला - जैसे कांटों पर पड़े मलमल के दुपट्टे को खींचा जाए, बस ऐसी ही। यातनाओं के दौर में सबसे ज्यादा तकलीफ़ झेलने वाले, पीठ पीछे बुराई(गीबत) करने वाले, झूठा इल्ज़ाम लगाने वाले लोग होंगे। वो शायद ऐसी पीड़ा से गुज़रेंगे जैसे हज़ारों बिच्छुओं ने उन्हें एक साथ डसा हो या जैसे खौलते हुए तेल में उन्हें डाला जाए। बहुत कुछ जैसा अपरिचित फिल्म में दिखाया गया था। ऐसा ही कुछ विभिन्न किताबों में लिखा हुआ है।

मरने के बाद इंसान इस बात से अनभिज्ञ रहता है कि वो मर चुका है कुछ लोग इस बात से इंकार कर सकते हैं कि सब फालतू बात है कुछ नहीं होता मरने के बाद... अगर ऐसा होता तो

पितरों की मोक्ष प्राप्ति का कार्यक्रम क्यों मनाया जाता या शब ए बारात की रात जिसमें ये माना जाता है कि उस दिन मरहूमों की रूह घर में आती है। नर्क की आग के बारे में तो सबने सुना है लेकिन मेरी रिसर्च के अनुसार नर्क हमारी सोच से भी ज्यादा दर्दनाक और डरावनी मंज़िल है। उसके पहले बरज़ख़ अर्थात् यातना मार्ग में आत्मा का सामना 7 तलों से होगा जिनमें भयावह आग होगी। आग ही ओढ़ना बिछाना होगी, आग ही भोजन होगी, या हम कह सकते हैं कि आग से बना हुआ है नर्क। लालची और कंजूस स्वर्ग में नहीं जाएंगे, ब्याज का काम करने वालों की भी भारी आलोचना की गई है। कई जानकार कहते हैं कि मरे हुए व्यक्ति का इस सांसारिक जीवन और यहां के लोगों से कोई संबंध नहीं रहता।

लेकिन ऐसा कैसे मुमकिन है कि सामाजिक ताने बाने में रिश्तों की डोरी में बंधा रहा इंसान इस दुनिया के सारे रिश्तों को भुला दे... कई बार सुना गया है कि मरने के बाद भी कई लोग अपने अपनों के सपने में आते हैं और उनसे बात करते हैं खुश या दुखी दिखते हैं। गरूड पुराण में इस सबकी बेहतरीन व्याख्या की गई है।

क्रयामत का दिन या कहें महाप्रलय जब आएगी तब हर व्यक्ति को अपने कर्मों का हिसाब देना होगा। हालांकि कईयों का विश्वास है कि मनुष्य को अपने कर्मों की सज़ा इसी जीवन में मिल जाती है लेकिन उनकी जानकारी अधूरी है क्योंकि इस दुनिया में होने वाली हरेक घटना ईश्वर द्वारा पहले ही तय कर दी गई है 'उसकी मर्ज़ी के बिना पत्ता भी नहीं हिलता।'।

दूसरों की सम्पत्ति हड़पने वालों

विश्वासघाती, यतीम बच्चों, विधवा महिलाओं का धन छीन लेने वालों के लिए अनेकानेक नारकीय कष्टों का उल्लेख मिलता है। 'बद्दुआ' को भी जीवन के कष्टों का एक कारण माना गया है। आत्महत्या करने वालों की भी कड़ी आलोचना की गई है क्योंकि जीवन को ईश्वर का उपहार माना गया है और उसे छीनने का हक किसी को नहीं है। मैं शोध की ज्यादा बातें नहीं लिखूंगा वर्ना ये लेख छपेगा ही नहीं, क्योंकि पत्रिका की अपनी सीमाएं हैं। लेकिन बुरे कर्म वालों की कभी मुक्ति नहीं होगी यह तय है।

हाँ लेकिन अगर अपने दिवंगतों के नाम पर दान-दक्षिणा, पिण्डदान तथा श्राद्ध कर्म आदि के साथ कुछ अच्छे काम किए जाएं तो इसका सीधा फ़ायदा उनकी आत्मा को मिलता है जैसे उनके नाम पर किसी गरीब बच्चे की पढ़ाई का खर्च उठा लिया जाए या किसी विद्यालय में बच्चों के लिए पीने के पानी की व्यवस्था करवा दी जाए या मुफ़्त में किताबें बंटवा दी जाएं तो भी इसका लाभ मृतकों को मिलता है, यानि नर सेवा ही नारायण सेवा है। जैसे कि आप अपने पिता के नाम पर एक पेड़ लगाएं और उसकी छाया में किसी को आराम मिले और वो व्यक्ति कह उठे 'अहा... जिसने भी ये पेड़ लगाया हो भगवान उसका भला करे।' बस ऐसे ही कार्यों से तुरंत लाभ मिलता है।

ऐसा माना गया है कि एक निश्चित अंतराल में दिवंगतों को अपने घर जाने की छूट दी जाती है और अगर घर वाले उनका ज़िक्र अच्छी बातों में करते हैं तो उनकी रूह को सुकून मिलता है और अगर वो उसे भुला चुके होते हैं तो वो

मायूस होकर लौट आता है। इसलिए कहा जाता है कि अपने दिवंगतों का ज़िक्र कभी भी बुराई में नहीं करना चाहिए वर्ना उनकी आत्मा शर्मिंदा होती है। गरूड पुराण में यममार्ग की व्याख्या को पढ़कर किसी की भी रूह कांप जाए कि वहां वृक्ष की छाया नहीं है, अन्न आदि भी नहीं है वहां कहीं भी पानी नहीं है वहां बस सूरज की तेज़ तपन है उस मार्ग से जाता हुआ व्यक्ति परेशानियों के अथाह जाल में उलझकर गुज़रता है वह कभी आग से जलाया जाएगा तो कभी सिंहों या भयंकर कुत्तों द्वारा खाया जाता है, कभी बिच्छुओं द्वारा डसा जाता है। 'असिपत्रवन' नामक नरक में भी नर्क की अवस्था का भयानक चित्रण किया गया है।

मैंने सभी धर्मों के ग्रंथों का अध्ययन किया और ये पाया कि सभी में आग और नर्क का गहरा ताल्लुक है। आग से बने कपड़े पहनाना, तो खौलता पानी सिर पर उंडेलना ये सब रूह कंपा देने वाली सज़ाओं का ज़िक्र है। वहीं दूसरी ओर कुरान में भी अच्छे कर्म करने वालों को मन चाहे ऐश में रहने की और बुरे कर्म वालों का कोई ठिकाना नहीं होने की बात कही गई है। दरअसल ये सारा खेल कर्मों का है धर्म कोई भी हो हमारे कर्म ही हमारा फैसला करेंगे। आप कुरान, बाईबल या गरूड पुराण कुछ भी पढ़ें आप इसी नतीजे पर पहुंचेंगे कि सिवाय अच्छे कर्मों के हमारा कोई साथी नहीं। बात ख़त्म कर रहा हूं वर्ना पत्रिका पूरी भर जाएगी। लेकिन.....मेरा शोध जारी है.....!!

समय का सदुपयोग



एस अपर्णा सरस्वती
सुपुत्री वी सुरेश
स.लेखापरीक्षा अधिकारी

समय चक्र की गति बड़ी अद्भुत है। समय का चक्र निरंतर गतिशील रहता है, रुकना इसका धर्म नहीं है। विश्व में समय सबसे अधिक महत्वपूर्ण एवं मूल्यवान माना गया है। यदि मनुष्य की अन्य धन-संपत्ति नष्ट हो जाए, तो संभव है वह परिश्रम, प्रयत्न एवं संघर्ष से उन्हें पुनः प्राप्त कर सकता है, किन्तु बीता हुआ समय कभी वापस नहीं आता। इसी कारण समय को सर्वाधिक मूल्यवान धन मानकर उसका सदुपयोग करने की बात कही जाती है।

समय कभी किसी की प्रतीक्षा नहीं करता। इसलिए हमें शुभ वक्त के इंतजार में समय गँवाने के बजाय निरंतर कर्म करते रहना चाहिए। अच्छे कर्म करके एवं स्वयं अच्छे व्यवहार ही समय को अनुगृहीत, अपने लिए प्रगतिशील एवं सौभाग्यशाली बना सकते हैं और बुरे कर्म तथा बुरे व्यवहार सहाय्युक्त समय को भी बुरा बना देते हैं। समय का सदुपयोग करने में ही जीवन की सफलता का रहस्य निहित है। समय का सदुपयोग करने का अधिकार सभी को समान रूप से मिला है। इसमें किसी का एकाधिकार नहीं है।

प्रत्येक काम को समय पर संपन्न करना ही सफलता का राज है। संसार में जितने महापुरुष हुए हैं, वे सभी समय का सदुपयोग करके ही उस मुकाम तक पहुँचे हैं। लोक-साहित्य में एक कहावत प्रचलित है कि 'पल भर का चूका आदमी कोसों पिछड़ जाता है', अर्थात् जो चलेगा वो कहीं न कहीं पहुँच जाएगा, न चलनेवाला मंजिल पाने के मात्र सपने ही देख सकता है।

आज का काम कल पर नहीं छोड़ना चाहिए। अपने कर्तव्य और धर्म से कभी पीछे नहीं हटना चाहिए। कोई काम छोटा या बड़ा नहीं होता है। एक अच्छा और सावधान व्यक्ति अपने अच्छे इरादों, अच्छे व्यवहार और समय के सदुपयोग से

साधारण काम को भी खास बना सकता है। यदि महान कार्य करके प्रसिद्धि पाने वाले वैज्ञानिक आज का काम कल पर टालते हुए हाथ पर हाथ धरे बैठे होते, तो जो सुख विभिन्न प्रकार के साधनों में उपलब्ध होते हैं, वे कभी भी संभव नहीं होते।

मनुष्य और पशु-पक्षियों में यही तो वास्तविक अंतर और पहचान है कि मनुष्य समय को पहचानकर उसका सदुपयोग करना जानता है, जबकि पशु-पक्षियों के पास ऐसी पहचान-परक शक्ति नहीं है। जिस प्रकार एक नदी बिना रुके पहाड़ियों के बीच से और छोटे पत्थरों के ऊपर से बहकर सदा प्रवाहित होती रहती है, उसी प्रकार मानव-जीवन भी अनेक उतार-चढ़ावों से गुजरता हुआ गतिशील रहता है। प्रकृति का कण-कण हमें समय-पालन की सीख देता है। अतः मनुष्य का यह कर्तव्य है कि जो बीत गया उसके बारे में सोचकर न रोए और वर्तमान और भविष्य को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़े। इसलिए कहा है – 'बीती ताहि बिसार दें, आगे की सुधि लेई'।

एक सांस लेने का अर्थ है- समय का एक अंश कम हो जाना, जीवन का कुछ छोटा होना। इसलिए महापुरुषों ने इस तथ्य को समझकर एक सांस या एक पल को न गँवाने की बात कही है। संत कबीर का यह दोहा समय के सदुपयोग का महत्व प्रतिपादित करने वाला है-

काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।

पल में परलय होएगी, बहुरी करेगा कब ॥

नदी



नीरू त्रिपाठी
आशुलिपिक ग्रेड-II

तू नदी है, तुझे गंतव्य की क्या फिक्र
तू बस बह तुझको है बस बहने से मतलब
पर्वतों से निकलती, खलियानों को सींचती
गाँवों और शहरों को पीछे छोड़ती वह
कहीं मिलेगी घनी आबादी, कहीं मिलेगा घना वन
कभी मिलेगा संकरा रास्ता, कभी बहने को खुला मैदान
कभी सर्द तुझको जमाएगी, कभी ग्रीष्म तुझको तपाएगी
कैसे भी हो हालात तेरे, तू निर्मल बहती चल
तू बस बह तुझको है बस बहने से मतलब
भीतर बवंडरों को समाए, शांत चल
कभी ऊंची पहाड़ियों की ऊंचाई नाप
तो कभी झरना बन गहराई से भेंट कर,
तेरे सामने खड़ा चट्टान अपनी कठोरता पे इतराएगा,
तू कोमल है यह समझाएगा, कमज़ोर है तू याद दिलाएगा
चट्टान में हौसलों की सुरंग बनाकर, मुस्कुरा कर बह
तू बस बह तुझको है बस बहने से मतलब
तुझसे जुड़ती, तो कभी बिछुड़ती तेरी धाराएं,
मिले जो उसमें खुश रह, जो बिछुड़े उसे पाने की कोशिश न कर,
उलझ मत, जिंदगी को जी, उसे समझने की कोशिश न कर,
पत्थरों को है समय के साथ रेत में बदलना,
असंख्य जीव और पादपों को है समय के साथ बढ़ना
हों रुकावटें कितनी भी तुझको है समर से ही मिलना
तू बस बह तुझको है बस बहने से मतलब ।

31 मार्च 2019 को समाप्त वर्ष के लिए, केरल सरकार – आर्थिक क्षेत्र पर भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की वर्ष 2021 की रिपोर्ट –सं.4 का सार

मार्च 2019 को समाप्त वर्ष के लिए, आर्थिक क्षेत्र – केरल सरकार पर भारत के नियंत्रक-महालेखापरीक्षक की रिपोर्ट सं.4, संविधान के अनुच्छेद 151 के तहत केरल के राज्यपाल को समर्पित करने हेतु तैयार की गयी थी। इस रिपोर्ट में केरल सरकार के आर्थिक सेवाओं के तहत आने वाले कृषि तथा लोक निर्माण विभागों की निष्पादन तथा अनुपालन लेखापरीक्षा के प्रमुख परिणाम अंतर्विष्ट हैं। इस रिपोर्ट को दि.10.06.2021 को केरल राज्य विधान सभा के समक्ष प्रस्तुत किया गया।

इस रिपोर्ट में एक निष्पादन लेखापरीक्षा रिपोर्ट और चार अनुपालन लेखापरीक्षा पैरा हैं। महत्वपूर्ण लेखापरीक्षा टिप्पणियां नीचे दी गयी हैं :

निष्पादन लेखापरीक्षा

केरला एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी की कार्य पद्धति

यह निर्धारित करने के लिए कि केरला एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी ने वर्तमान अधिनियमों तथा विनियमों के संदर्भ में शैक्षिक, अनुसंधान तथा विस्तृत शिक्षा कार्यकलापों के क्षेत्र में किस हद तक अपने संगठनात्मक लक्ष्य तथा उद्देश्य प्राप्त किए हैं और साथ ही विश्वविद्यालय की कार्य पद्धति में मितव्ययता, दक्षता तथा प्रभाविता सुनिश्चित करने के लिए उसके वित्तीय प्रबंधन तथा आंतरिक नियंत्रणों की पर्याप्तता आंकने के लिए एक निष्पादन लेखापरीक्षा आयोजित की गयी थी।

केरला एग्रीकल्चर यूनिवर्सिटी (के ए यू) अधिनियम, 1971 के तहत यथा आज्ञापित,

उसकी संविधियों, अधिदेशों तथा विनियमों की रूपरेखा तैयार/अद्यतित न करने तथा उसको राजपत्र में प्रकाशित न करने के कारण विश्वविद्यालय का शासन ढांचा कमजोर हो गया था। आगे, विश्वविद्यालय ने विहित विधि से 'विश्वविद्यालय अधिकारियों' को नियुक्त नहीं किया था। पूरे अतिरिक्त प्रभारों के साथ शिक्षण कर्मचारियों को इन पदों के लिए नामित किया जाता था। इन परिपाटियों के कारण विश्वविद्यालय द्वारा उसको शासित करने वाले विभिन्न विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यू जी सी) विनियमों तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (आई सी ए आर) के लागू मार्गदर्शी सिद्धांतों का अनुपालन नहीं किया जा सका। इसके अलावा, यह वैज्ञानिक पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्रों की प्रमाणा तथा गुणता की दृष्टि से भी उसके न्यून-निष्पादन का कारण सिद्ध हुआ।

राष्ट्रीय कृषि शिक्षा प्रत्यायन बोर्ड (एन ए ई ए बी) जो कि कृषि विश्वविद्यालयों के लिए प्रत्यायन एजेंसी है, को प्रत्यायन प्रक्रिया के दौरान विश्वविद्यालय द्वारा प्रस्तुत सूचना में तथ्यपरक गलतियां थी। विश्वविद्यालय ने, पीएचडी उपाधियां प्रदान करने तथा नियमित व संविदा पर शिक्षण कर्मचारियों दोनों की भर्ती से संबंधित संगत यूजीसी विनियमों का अनुपालन नहीं किया था। परिणामस्वरूप अग्रिम वेतन-वृद्धि प्रदान करने से संबंधित सरकारी मानदण्ड पूरे नहीं हुए थे और ऐसी उपाधियां प्राप्त किए संकाय सदस्यों को अग्रिम वेतन-वृद्धि प्रदान करने में अनियमितताएं थी। विश्वविद्यालय ने अम्बलवयल, वयनाड में एक कॉलेज की स्थापना की जिसमें आईसीएआर द्वारा निर्धारित न्यूनतम अपेक्षाएं नहीं थी।





वर्ष 2010 में स्थापित क्लाइमेट चेंज एडाप्टेशन में विश्वविद्यालय का एकीकृत स्नातकोत्तर उपाधि कार्यक्रम, शुरुआत से ही बिना कोई स्थायी संकाय से चल रहा था क्योंकि विश्वविद्यालय द्वारा उनकी भर्ती से संबंधित संविधि तैयार नहीं की गयी थी।

विश्वविद्यालय का अनुसंधान उत्पाद, उसके संकाय सदस्यों द्वारा वैज्ञानिक पत्रिकाओं में प्रकाशित शोध पत्रों की संख्या व गुणता की दृष्टि से न्यूनतम मानदण्ड से काफी कम था। वर्ष 2014 से 2018 तक की अवधि के दौरान उसके एक तिहाई से अधिक संकाय सदस्यों ने किसी शोध पत्र का लेखन या सह-लेखन नहीं किया था। विश्वविद्यालय द्वारा विकसित फसल की नयी किस्मों का प्रचालन, इन किस्मों को बीज अधिनियम, 1966 के तहत अधिसूचित कराने के उपाय प्रारंभ न करने के कारण प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुआ। विश्वविद्यालय ने, पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण अधिनियम, 2001 के तहत उसके द्वारा विकसित फसल की नयी किस्मों की सुरक्षा के लिए कोई उपाय नहीं किया था। पेटेंट के लिए आवेदन किए बगैर नए तौर पर विकसित तकनीकों को अंतरित किया जाता था। अपने स्वामित्व के भौगोलिक संकेतों का संभावित उल्लंघनों को निर्धारित करने के लिए विश्वविद्यालय में कोई व्यवस्था नहीं थी।

विश्वविद्यालय द्वारा प्रयुक्त लेखाकरण साफ्टवेयर की विश्वसनीयता तथा नियंत्रणों को किसी बाह्य एजेंसी द्वारा प्रमाणित नहीं किया गया था। यह आंकड़ों में हेरफेर करने के द्वारा कदाचार और धोखा-धड़ी का कारण बन सकता है। विश्वविद्यालय के अंतर्गत आने वाले

पचास प्रतिशत से अधिक स्टेशन भी, उसकी आंतरिक लेखापरीक्षा में समाविष्ट नहीं थी। विश्वविद्यालय द्वारा लोक लेखा समिति (पी ए सी) की सिफारिशों पर कोई कार्रवाई शुरु नहीं की थी।

अनुपालन लेखापरीक्षा पैरा

- विभागीय पदाधिकारियों द्वारा सावधानी एवं जांच न बरते जाने के कारण, विभिन्न कार्यों के लिए बिटुमेन की खरीद के समर्थन में एक ही बीजक की कई प्रतियां जमा करके लोक निर्माण विभाग के ₹30.65 लाख तक ठगने में ठेकेदार समर्थ हुए।

- ठेकेदारों के पक्ष में लोक निर्माण विभाग द्वारा अनुमानों के पुनरीक्षण के परिणामस्वरूप तीन पुलों के निर्माण कार्यों में ₹1.99 करोड का अस्वीकार्य भुगतान हुआ।

- बिटुमेन की बाजार भाव में हुई कमी के कारण ठेकेदारों से विभागीय बिटुमेन की विभेद लागत वसूल करने में लोक निर्माण विभाग की विफलता के परिणामस्वरूप ठेकेदारों को ₹4.36 करोड का अनर्हक लाभ हुआ।

- वर्ष 2014-15 से 2018-19 तक की अवधि के दौरान आठ पीडब्ल्यूडी प्रभागों में निष्क्रिय पड़े 86 रोड रॉलर से जुड़े कर्मचारियों के वेतन देने में, लोक निर्माण विभाग को ₹18.34 करोड का बेकार खर्च उठाना पड़ा।

आज़ादी का अमृत महोत्सव



आज़ादी की 75वीं सालगिरह पर कार्यालय प्रांगण में आयोजित समारोह की झलकियां